अगर मुताबक़त (अनुकूलता) हो जाए तो वह रिवायत मुझ से है और अगर मुताबक़त न होतो वह रिवायत मुझ से नहीं की गई है। अतः महेदी अले० की रिवायत की सेहत इस प्रकार होगी।

प्र. : **हदीसे मुतवातिर के मुन्किर के बारें में क्या हुक्म है?**

उ. : हदीसे मुतवातिर और इमाम अले० की मुतवातिर रिवायत का मुन्किर काफ़िर है। *वल्लाहु आलम।*

यह मुख़्तसर मसाएल बच्चों के लिए मुफ़ीद (लाभदायक) है और उनकी तफ़सील व शर्ह (व्याख्या) मैं ने अपने तवील रिसालों में की है। अल्लाह तआला का शुक्र है कि यह रिसाला बंदऐ ख़ाकसार से पुरा करा दिया।

*फ़क़त*



# अल अक़ाइद

## (पहला भाग)

### कमसिन बच्चौं की शिक्षा के लिये

लेखक

**ह० बहरूल उलूम अल्लामा सैयद अश्रफ़ शम्सी रह०**

अनुवादक

**शेख़ चाँद साजिद**

एम.ऐ, एम. फ़िल (उस्मानिया)

**अल्लामा शम्सी रिसर्च अकाडमी**

१-६-८०६, महेदी मन्ज़िल, दायरा मुशीराबाद, हैदराबाद - ५०००२०.

प्र. : ह० महेदी अले० का किस तारीख़ और किस दिन इन्तिक़ाल (निधन) हुआ?

उ. : सोमवार १९ जीक़ादा ९१० हिजरी (१५०५ ईसवी) में विसाल (निधन) हुआ।

प्र. : रोज़ए मुबारक (समाधि भवन) किस शहर में है?

उ. : शहर फ़राह (अफ़ग़ानिस्तान) में एक आलीशान गुम्बद (भव्य अंड) है और खुरासान में मशहूर है।

प्र. : बंदगी मियाँ सैयद महमूव रज़ी० को सानीये महेदी कहने का क्या कारण है?

उ. : जब. ब. सैयद महमूद रज़ी० ह० महेदी अले० को क़ब्र में रखकर बाहर आए तो आपकी शकल व सूरत महेदी अले० की हो गई। जो सहाबा मौजूद थे उन्होंने देखकर यह कहा कि आपकी जात सानीए महेदी है?

प्र. : ह. महेदी मोऊद अले० ने उन मसअलों (समस्याओं) में जो इबादात व मुआमलात व अक़ायद (उपासना, व्यवाहार, श्रद्धा) से सम्बन्ध रखते हैं और उनमें इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहे०, इमाम शाफ़ई और इमाम मालिक और इमाम अहमद बिन हम्बल रहे० ने इख़तिलाफ़ फ़रमाया है कुछ फ़ैसला फ़रमाया या नहीं?

उ. : जो धार्मिक किताबें इस समय हमारी क़ौम में मौजूद है उनमें अक़ायद व इबादात और मुआमलात की तफ़सील (विस्तार से) नहीं है मगर एक रिवायत क़ौम में मश्हूर है और वह यह है कि सब शरई मसअलों में उन इमामों ने जिनका ज़िक्रऊपर हुआ है ख़ूब मूशिगाफ़ी की है यानि उन (धर्म प्रश्नों) का बहुत साफ़ बयान किया है और उनके सब पहलुओं (आकृति) पर नज़र डाली है, (इसलिए) उनमें ग़ौर कर के उन मसअलों पर अमल करो जिनमें आलियत (उच्चता) है और उन मसअलों को छोड़ दो जिन में रूख़सत है। अतः उस फ़ैसले को पेशे नज़र (सामने) रख लिया जाए और उसके अनुसार अमल करे। हाँ जिन मसअलों को ख़ुद इमाम अले०



بسم الله الرحمن الرحيم

# प्रस्तावना

सारी प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये है जो इस जगत का पैदा करने वाला है और दरूद व सलाम ख़तिमैन अलैहिमस्सलाम पर और उनकी सन्तान और अस्हाब पर।

यह अल्लाह तआला की कृपा है कि मुझे अपने दादा हज़रत अल्लामा बहरूल उलूम अश्रफ़ुल उलमा सैयद अश्रफ़ शम्सी रह० की रचित पुस्तकों की रक्षा और प्रकाशन का साहस और क्षमता दी। इसी लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते हुवे अल्लामा शम्सी रिसर्च अकाडमी ने अब तक उर्दू भाषा में चौदह रचनाऐं, हिन्दी भाषा में दो और अंग्रज़ी भाषा में दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

अल - अक़ाइद के पहले और दूसरे भाग का सरल हिन्दी अनुवाद २००४ में प्रकाशित किया गया था जो अब दुबारा प्रकाशित किया जा रहा है ताकि उर्दू से अपरिचित लोग लाभ उठा सकें। इसके अलावा अल - अक़ाइद के तीसरे और चौथे भाग का हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया जाचुका है। यह हिन्दी अनुवाद जनाब शेख़ चाँद साजिद ने किया है जिन्हों ने अल्लामा शम्सी रह० पर रिसर्च किया और अरबी भाषा में एम-फ़िल की डिग्री हासिल की। अल-अक़ाइद के चारों भाग का अंग्रेज़ी अनुवाद भी अकाडमी ने प्रकाशीत किया है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हमारा मह प्रयास सफल हो और यह पुस्तक आपके लिये लाभ दायक साबित हो। *आमीन*

४ सफ़र १४३६ हिज्री
२७ नवम्बर २०१४

**सैयद यदुल्लाह शजी यदुल्लाही**
अध्यक्ष अल्लामा शम्सी रिसर्च अकाडमी

**प्र. : हज़रत इमाम अले० ने अपने सहाबा में किसी को जन्नत में दाख़िल होने की खुश ख़ब्री (शुभ समाचार) दी है या नहीं?**

उ. : बारह सहाबियों को जन्नत (स्वर्ग) की शुभ सूचना दी है और वह यह है:- १) बन्दगी मियाँ सैयद महमूद सानीए महदी रज़ी०, २) बन्दगी मियाँ सैयद ख़ुंदमीर सिद्दीक़े विलायत रज़ी० ३) बन्दगी मियाँ शाहे नेमत रज़ी० ४) बन्दगी मियाँ शाहे निज़ाम रज़ी०, ५) बन्दगी मियाँ शाहे दिलावर रज़ी०, ६) ब. मलिक बुर्हानुद्दीन रज़ी० ७) ब. मलिक गौहर रज़ी० ८) बन्दगी मलिक मारूफ़ रज़ी० ९) बन्दगी मियाँ शाह अमीन मुहम्मद रज़ी० १०) बंदगी मियाँ यूसुफ़ रज़ी० ११) बंदगी मलिक जी रज़ी० शहज़ादए लाहूत हाकिमे नागोरे १२) बंदगी मियाँ शाह अब्दुल मजीद नूर नोश रज़ी०।

**प्र. : इन सहाबा में कितने सहाबा सब सहाबा से अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) हैं?**

उ. : पांच हैं। बंदगी मियाँ सैयद महमूद सानीए महदी रज़ी०, बंदगीं मियाँ सैयद खुँदमीर रज़ी०, बंदगी मियाँ शाह नेमतुल्लाह रज़ी० बंदगी मियाँ शाह निज़ाम रज़ी० और बंदगी मियाँ शाह दिलावर रज़ी०।

**प्र. : इन पांचों सहाबियों में कौन अफ़्ज़ल है?**

उ. : दो सहाबी अफ़ज़ल है। १) ब. सैयद महमूद सानीए महदी रज़ी०, २) ब. सैयद ख़ुंदमीर रज़ी०।

**प्र. : इन दोनों में कौन अफ़्ज़ल हैं?**

उ. : इमाम अले० की सही रिवायतों से साबित हुआ है कि यह दोनों सहाबी एक मरतबे (वर्ग) के हैं और बंदगी मलिक अलाहदाद रज़ी० ने जो तबक़ए ताबईन में मश्हूर हैं यही फ़ैसला (निर्णय) फ़रमाया है कि ब. सैयद महमूद सानीए महदी रज़ी० और ब. सैयद ख़ुंदमीर रज़ी० बराबर हैं और यह निर्णय हमारी क़ौम में मश्हुर है। उन दोनों में कमी व बेशी (न्यूनता या अधिकता) का एतिक़ाद (श्रद्धा) नहीं रखना चाहिए।

**प्रश्न : ईमान क्या चीज़ है ?**

उत्तर : *अश्हदु अन् ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दहु व रसूलहु*, कहना और उसी का दिल में एतिकाद (पूरा विश्वास) रखना, और जिन चीज़ों को हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सला० ने ज़रुरियाते दीन फ़रमाया है उनकी तस्दीक़ करना।

**प्र. : इस्लाम क्या है ?**

उ. : पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, काबे का हज करना ।

**प्र. : एहसान क्या है ?**

उ. : एहसान के यह माने हैं कि अल्लाह तआला की इस तरह इबादत करना कि वह तुम्हारे रूबरू है और तुम उसको देख रहे हो, अगर तुम उसको न देख सको तो यह समझ कर इबादत करो कि वह तुमको देख रहा है।

**प्र. : तौहीद क्या है ?**

उ. : अल्लाह तआला को एक जान्ना और उसकी ज़ात व सिफ़ात (गुण) में मख़लूक़ को शरीक न करना ।

**प्र. : अल्लाह तआला की सिफ़तें क्या हैं ?**

उ. : अल्लाह तआला आलिम (सर्वज्ञ) है, क़ादिर (सर्व शक्ति शाली) है, ज़िन्दा (जीवित) है, सुनता है, देखता है, कलाम करता है, इरादा करके काम करता है।

**प्र. : क्या अल्लाह तआला हर चीज़ को जानता है ?**

उ. : धिपी हुई (गुप्त) चीज़ों और ज़ाहिर (प्रकट) चीज़ों को जानता है। हम जो कुछ कहते और करते और दिल में इरादा करते हैं सब जानता है।

**प्र. : अगर किसी ने आपको नबी मुशर्रअ कहा तो उसपर क्या हुक्म है?**

उ. : चूंकि आयते क़ुरआने मजीद का मुन्किर है इसलिए वह काफ़िर है।

**प्र. : जब महेदी अले० ख़लीफ़तुल्लाह दाई इलल्लाह हैं तो क्या रसूलुल्लाह सल्ला० के बराबर (समान) हैं और हम रुत्बा हैं ?**

उ. : हर पैग़ाम्बर अल्लाह का ख़लीफ़ा है और दाई इलल्लाह यानि अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाता है पस ख़लीफ़ए ख़ुदा और दाई इलल्लाह होने से कोई पैग़म्बर रसूलुल्लाह सल्ला० के हमरुत्बा (समान) नहीं हो सकता बल्कि रसूलुल्लाह सल्ला० सब पैग़म्बरों से बुज़र्ग (प्रतिष्ठित) हैं।

**प्र. : महेदी अले० किस वजह से रसूलुल्लहा सल्ला० के हमरुत्बा है?**

उ. : महेदी अले० इस वजह से रसूलुल्लाह सल्ला० के हमरुत्बा (समान) हैं कि आप रसूलुल्लाह सल्ला० के ताबए ताम (पूर्ण रुप अनुसरण करने वाले) हैं यानि जो क़ौल व फ़ेल व हाल (वचन, कर्म, दश) रसूलुल्लाह सल्ला० का था वही क़ौल व फ़ेला और हाल महेदी अले० का था और उसमें सरे मू (बाल बराबर) ख़ता नहीं थी, इसलिए चूँकि आप रसूलुल्लाह सल्ला० के ताबे ताम हैं रसूलुल्लाह सल्ला० के हमरुत्बा और बराबर (समान) हैं। अतः जिसने उन दोनों में फ़र्क (अन्तर) किया वह काफ़िर है।

**प्र. : क्या हमारे बुज़र्गाने क़दीम का यही एतिक़ाद है?**

उ. : महेदी अले० के सहाबा और ताबईन के ज़माने से यही ऐतिक़ाद है।

**प्र. : जिसने यह ऐतिक़ाद नहीं रखा बल्कि रसूलुल्लाह सल्ला० को अफ़ज़ल (सर्वोच्च) कहा और ह० महेदी अले० को कमतर (अल्पतर) कहा तो क्या वह काफ़िर हो जाएगा?**

उ. : जिसने रसूलुल्लाह सल्ला० और महेदी अले० को बराबर नहीं कहा वह बेशक काफ़िर है।



**प्र. : फ़िरिश्ते कौन लोग है?**

उ. : फ़िरिश्ते अल्लाह तआला के बन्दे है, बड़े फ़रमाँ बर्दार (आज्ञ पालक) है, कभी उनसे ख़ता नहीं होती।

**प्र. : क्या फ़िरिश्ते भी हमारे जैसे आदमी है ?**

उ. : वह हज़रत आदम अलै० की औलाद से नहीं है बल्कि हज़रत से पहले पैदा होचुके हैं।

**प्र. : क्या वह मिट्टी से नहीं बनाये गये और मिट्टी के पुतले नहीं है?**

उ. : वह मिट्टी के पुतले नहीं है बल्कि वह नूर के पुतले हैं, अल्लाह तआला ने उन्को नूर से पैदा किया है।

**प्र. : क्या फ़िरिश्ते लोगों को नज़र आते है ?**

उ. : वह सब लोगों को नज़र नहीं आते।

**प्र. : इसका क्या कारण है ?**

उ. : फ़िरिश्तों के जुस्से (शरीर) बहुत ज़्यादा (अत्याधिक) पाक है और जो चीज़ ज़्यादा पाक होती है वह नज़र नहीं आती, इसी लिये फ़िरिश्ते भी नज़र नहीं आते। देखो और ग़ौर करो कि अल्लाह तआला की बाज़ मख़लूक़ जिसमें हम हमेशा चलते फिरते रहते बसते हैं, जैसे कि हवा, वह हमको नज़र नहीं आती।

**प्र. : यह सब फ़िरिश्ते कहाँ रहते है ?**

उ. : आसमानों और ज़मीनों पर रहते है उनमें से बाज़ ऐसे फ़िरिश्ते हैं जो आसमान से ज़मीन पर उतरते हैं और बाज ज़मीन से आसमान पर चढ़ते हैं।

**प्र. : क्या फ़िरिश्ते किसी इनसान को नज़र नहीं आते ?**

उ. : बाज़ इन्सानों को नज़र आते हैं। अतः पैग़म्बरों को नज़र आते हैं उनसे बातचीत भी करते हैं।

**प्र. : शबे क़दर में जो दो रकातें फ़र्ज़ की नियत बांध कर पढ़ा करते है यह किस वजह से फ़र्ज़ की गईं।**

उ. : लैलतुल क़दर की तअईन (निर्दिष्टीकरण) रसूलुल्लाह सल्ला० ने नहीं फ़रमाई थी और उस विषय में ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ला० के सहाबा के बीच इख़तेलाफ़ (भेद) रहा है। चुनांचे बाज़ सहाबा यह कहते हैं कि यह रात वर्ष में एक बार आती है उसका कोई महीन मुक़र्रर (निश्चित) नहीं है और बाज़ कहते है कि रमज़ान के आख़रीं हिस्से में यह रात है मगर उसकी तारीख़ निश्चित नहीं की और बाजों ने बयान किया है कि रमज़ान की तेईसवीं (२३) तारीख़ यही रात है और बाजों ने सत्ताईसवीं (२७) रात को मुऐयन (निश्चित) किया है और अक्सर इनफ़िया का यही ख़याल है मगर इन सब रिवायतों में से किसी से यह यक़ीन (विश्वास) नहीं है कि लैलतुल क़दर की कोई तारीख़ निश्चित है। खुलासा (सारांश) यह कि उस इख़तिलफ़ की वजह से किसी राय (विचार) पर यक़ीन न रहा। अल्लाह तआला ने ख़ास अपने कमाले लुत्फ़ (विशेष कृपा) से महेदी मौऊद अले० को उस रात का इल्म (ज्ञान) बख़्श दिया । ह० महेदी अले० ने उस बुज़र्ग (प्रतिष्ठित) रात के ज़ाहिर होने के शुक्र (धन्यवाद) में अल्लाह तआला के हुक्म (आदेश) से दो रकअतें जमाअत के साथ अदा फ़रमायीं । चूंकि ख़ुदा के हुक्म से आप ने यह रकअतें अदा की हैं इसलिए यह रकअतें हमारे पास फ़र्ज़ हैं।

**प्र. : क्या इन फ़राइज़ का इन्कार (अस्वीकृति) कुफ्र है?**

उ. : हाँ बेशक कुफ्र है क्योंकि यह अहकाम मुख़बिरे सादिक़ (सत्यवादी सूचक) यानि महेदी मौऊद अले० के फ़रमान (आदेश) से फ़र्ज़ हुए हैं।

**प्र. : क्या जिस तरह महेदी अलैहिस्सलाम के महेदी होने का इन्कार कुफ्र है उसी तरह उन अहकाम का इन्कार भी कुफ्र है या कुछ फ़र्क़ है?**

उ. : कुछ फ़र्क़ नहीं है। जिस प्रकार महेदी अले० के महेदी होने का इन्कार कुफ्र है उसी प्रकार उन अहकाम का इन्कार भी कुफ्र है।



अलै० की यह ख़िदमत है कि जब अल्लाह का हुक्म हो सुर (प्रलय - शंख) फूंक दें। दो बार सूर फूँका जाएगा। पहले उनके सूर (की वाणी) से सारी दुनिया,आसमान व ज़मीन और उनमें जो चीजें हैं वह सब फ़ना (नष्ट) हो जायेंगी, और दुसरी बार उनके सूर से सारी दुनिया और सब चीजें पैदा हो जायेंगी।

**प्र. : उन फ़िरिश्तों में सबसे बुज़ुर्ग (प्रतिष्ठित) फ़िरिश्ता कौन है ?**

उ. : हज़रत जिबराईल अलै० हैं। ख़ुद अल्लाह तआला ने उनकी तारीफ़ (प्रशंसा) क़ुराआने मजीद में फ़रमाई है और फ़रमाया है कि जिबराईल अलै० फ़िरिश्तों में सरदार हैं।

**प्र. : फ़िरिश्ते कितने होंगे ?**

उ. : फ़िरिश्तों की गिनती कोई इनसान नहीं जानता। अल्लाह तआला ही उनकी गिनती जानता है।

**प्र. : वही के क्या माने (अर्थ) हैं ?**

उ. : *वही* के माने लुग़त में लिखने और किताब के हैं और शर्अ में वही उन अहकाम और ख़बरों का नाम है जिनकी इत्तेलाअ (सूजना) फ़िरिश्तों और पैग़म्बरों को अल्लाह तआला की तरफ़ से होती है।

**प्र. : क्या वही पैग़म्बरों पर फ़िरिश्तों के ज़रिए (माध्यम) से उतरती है या ख़ुद अल्लाह तआला पैग़म्बरों पर वही अतारता है?**

उ. : कभी ऐसा होता है कि अल्लाह तआला फ़िरिश्तों के ज़रिए से पैग़म्बरों पर वही भेजता है और कभी ख़ुद पैग़म्बरों पर बिना माध्यम के वही उतारता है। चुनांचे अल्लाह ने हज़रत मूसा अलै० से कलाम (वार्तालाप) फ़रमाया है।

**प्र. : वही कितने क़िस्म (प्रकार) की होती है ?**

उ. : वही तीन क़िस्म की होती है। एक वही इल्हाम है जसके यह माने है कि अल्लाह तआला अपने बन्दे के दिल में कोई हुक्म या ख़बर पैदा कर देता

*बिइबादति रब्बिही अहदा* (कहफ़्-११०)। यानि जो शख़्स ख़ुदा को देखना चाहता है वह नेक अमल करे। उस नेक अमल से तरके दुन्या मुराद है।

**प्र. : उज़्लत अज़ ख़ल्क़ का क्या मतलब है और उसके फ़र्ज़ होने पर कौन-सी आयत है?**

उ. : उज़लत अज़ कल्क़ का अर्थ यह है कि उन लोगों से जुदा रहें जो दिल को अल्लाह की तरफ़ से दूसरी तरफ़ फिरा देते हैं और दीन को खेलबाज़ी समझते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:- *वज़रिल् लजीनत् तख़ज़ू दीनहुम लइबन् व लहवन् व गुर्रतहुमुल हयातुद् - दुनिया* - (अन्आम - ७०) यानि उन लोगों को छोड़ दो जिन्होंने अपने दीन को खेल कूद बना रखा है उनको दुन्या ने धोका दिया है।

**प्र. : तबक्कुल के फ़र्ज़ होने पर कौन - सी आयत दलील है?**

उ. : अल्लाह तआला फ़रमाता है:- *फ़ तवक्कल अलल्लाह इन्नल्लाह युहिब्बुल मुतवक्किलीन* (आले इम्रान - १५९) - यानि अल्लाह पर पूरा विश्वास रखो बेशक अल्लाह तआला उस पर विश्वास करने वालों को दोस्त रखता है। इस आयत से तवक्कुल फ़र्ज़ है।

**प्र. : सोहबते सादिकाँ किस आयत से फ़र्ज़ है?**

उ. : अल्लाह तआला फ़रमाता है:- *वकूनू मअस्सादिक़ीन* (तौबा-११९) यानि तुम सच्चे लोगों के साथ हो जाओ। इस आयत से सोहबते सादिक़ीन फ़र्ज़ है।

**प्र. : हिजरत किस आयत ते फ़र्ज़ है?**

उ. : अल्लाह तआला फ़रमाता है:- *क़ालू अलम तकुन अरज़ुल्लाह वासिअतन् फ़तुहाजिरु फ़ीहा फ़ऊलाइक मावाहुम जहन्नमु व सअत मसीरा* (निसा-९७) - यानि जो लोग दीन में कमज़ोरी आजाने के बावजूद काफ़िरों के शहरों से नहीं निकले उनको फ़िरिश्ते कहेंगे क्या अल्लाह तआला की ज़मीन तुम्हारे लिए वसीअ (विस्तृत) नहीं थी तुम पर वाजिब था कि तुम उन शहरों से निकल जाते उन लोगों के लिए दोज़ख़ और बुरी पूछ गछ है।



उतरी है। हज़रत ईसा अलै० पर इन्जील उतरी है। और हज़रत ख़ातिमुल् अंबिया मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० पर क़ुरआने मजीद उतरा है।

**प्र. : ख़ुदा की किताबों में क्या - क्या मज़मून (विषय) होते हैं ?**

उ. : ख़ुदा की किताबों में कई क़िस्म के मज़मून होते हैं। एक यह कि अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात व मलायका व अहवाले क़ियामत, जन्नत व दोज़ख़ (स्वर्ग तथा नरक), सवाब व अज़ाब का ज़िक्र होता है। दूसरा यह कि अल्लाह तआला की इबादत के तरीक़े और अक़सामे इबादत का बयान (वर्णन) होता है। तीसरा यह कि दुनयावी मामेलात (सांसारिक व्यावहार) के उसूल व ज़वाबित (सिद्धान्त तथा नियम) का ज़िक्र होता है। चौथा पछिले पैग़म्बरों और उनकी उम्मतों की ख़बरों और आईन्दा (आगामी) ख़लीफ़ों की ख़ुश ख़बरियाँ और पांचवां नसीहतें और अमसाल (नीति - कथा) वग़ैरह होते हैं।

**प्र. : यह चारों किताबें एक ही ज़बान में हैं या हर एक की जुदा - जुदा ज़बान (भाषा) हैं ?**

उ. : तौरात की ज़बान इबरानी है और इन्जील व ज़बूर की ज़बान (भाषा) सिरयानी है और क़ुरआने मजीद की ज़बान अरबी है।

**प्र. : इन कितबों की ज़बानें जुदा जुदा होने की क्या वजह (कारण) है ?**

उ. : पैग़म्बरों और उनकी क़ौमों की जो ज़बान होती है उसी में ख़ुदा की किताब पैगम्बरों पर उतरती है।

**प्र. : नबी और रसूल के क्या माने हैं?**

उ. : इसके माने पहले बयान हो चुके हैं मगर यहां भी ज़िक्र किया जाता है। नबी वह पाक और बुज़ुर्ग शख़्स है जिसको अल्लाह तआला अपने बन्दों की रहनुमाई (मार्ग-प्रदर्शन) के लिये पैदा करता है। और जिबराईल अलै० के ज़रिए उसको तालीम (शिक्षा) देता है। और रसूल वह नबी है जो किसी क़ौम की तरफ़ उनकी हिदायत (निर्देश) के लिये भेजा जाता है।

करने वाला (ताबे) हूँ और मुबय्यिने शरीअत (धार्मिक नियम का अर्थ स्पष्ट करने वाला) हूँ।

**प्र. : महेदी अले० किस चीज़ में रसूलुल्लाह सल्ला० के ताबे है?**

उ. : अल्लाह तआला ने जो शरीअत रसूलुल्लाह सल्ला० पर उतारी है उसकी आप पैरवी (अनुसरण) करते थे और इस तरह पैरवी फ़रमाते थे जिस तरह ख़ुद रसूलुल्लाह सल्ला० फरमाते थे उसमें बाल बराबर भी फ़र्क़ नहीं होता था। इसीलिए रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़रमाया है कि महेदी मेरे क़दम ब क़दम चलेंगे और ज़रा भी ख़ता नहीं करेंगे यानि जो कुछ आँहज़रत सल्ला० ने अमल किया है वही करेंगे। ह० महेदी अल० ने वही अमल किया जो आँहज़रत सल्ला० अमल करते थे।

**प्र. : क्या महेदी अले० के सिवाय (अतिरिक्त) कोइ दूसरा शख़्स भी उस तरह की पैरवी कर सकता है?**

उ. : रसूलुल्लाह सल्ला० ने उस पैरवी की ख़बर ख़ास महेदी अले० की शान में फ़रमाई है और यह ज़ाहिर फ़रमाया है कि महेदी अले० मेरी पैरवी में ख़ता नहीं करेंगे। अतः महेदी अले० इस वजह से कि आप मासूम (अप्रमाद) हैं, रसूलुल्लाह सल्ला० की पैरवी में अपनी नज़ीर (समान) नहीं रखते।

**प्र. : क्या रसूलुल्लाह सल्ला० के सहाबा (सहचर) भी ऐसी पैरवी नहीं कर सकते?**

उ. : नहीं कर सकते क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ला० के सहाबा मासूम नहीं हैं इस लिये मुमकिन (संभव) है कि उनकी पैरवी में ख़ता हो जाये।

**प्र. : क्या रसूलुल्लाह सल्ला० के सहाबा का मासूम होना माबित नहीं है?**

उ. : कोई शरई दलील (धार्मिक तर्क) उनके मासूम होने पर मौजूद नहीं है और उसके अलावा सहाबा रज़ी० मुस्तक़िल (स्थायी) साहबे दावत नहीं है। अगर वे मुस्तक़िल साहबे दावत होते तो उनका मासूम होना वाजिब (अत्यावश्यक) होता क्योंकि मुस्तक़िल साहबे दावत की तस्दीक़ (पुष्टि)



**प्र. : क्या हज़रत आदम अलै० पर अल्लाह ने कोई किताब उतारी थी ?**

उ. : हज़रत आदम अलै० पर कोई कताब नहीं उतरी बल्कि आप पर सहीफ़े उतरे हैं और उन पर अमल करने की तालीम दी है।

**प्र. : हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० के माँ - बाप का क्या नाम है ?**

उ. : आपके पिता का नाम अब्दुल्लाह और माँ का नाम बीबी अमिना था।

**प्र. : हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० किस पैग़म्बर की औलाद से हैं?**

उ. : हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलै० की औलाद (संतान) से हैं।

**प्र. : हज़रत इब्राहीम अलै० को कितने फ़र्ज़न्द (पुत्र) थे और उनके नाम क्या थे ?**

उ. : हज़रत इब्राहीम अलै० के दो फर्ज़न्द (पुत्र) थे औ उनके नाम इसहाक़ और इसमाइल थे ।

**प्र. : क्या यह दोनों पैग़म्बर थे ?**

उ. : हाँ यह दोनों पैग़म्बर थे ।

**प्र. : क्या यह दोनों पैग़म्बर सगे भाई हैं या उनकी माँ जुदा है ।**

उ. : हज़रत इसमाईल अलै० की माँ का नाम हाजरा था और हज़रत इसहाक अलै० की माँ का नाम सारा था ।

**प्र. : यह दोनों पैग़म्बर कहाँ रहते थे ।**

उ. : हज़रत इसमाईल अलै० अपनी माँ के साथ मक्के में रहते थे और हज़रत इसहाक अलै० अपनी माँ के साथ मुल्के शाम में रहते थे।

**प्र. : हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० किसकी औलाद में से हैं ?**

उ. : हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० इसमाईल अलै० की औलाद में से हैं ।

**प्र. : इसहाक अलै० को कितने फर्ज़न्द थे ।**

उ. : मशहूर है कि दो फर्ज़न्द थे ऐस अलै० और याक़ूब अलै० । हज़रत

आपकी तक़रीर (भाषण) सुनकर आजिज़ (विवश) हो जाते थे और अन्त में आपको ***असदुल् उलमा*** का ख़िताब (उपाधि) दिया। आपकी शुहरत (चर्चा) दूर - दूर के मुल्कों में हो गई थी कि आप कम उम्री में बहुत बड़े आलिम हो गए। उसके बाद आप हमेशा ख़ुदा की याद में रहते थे और दुन्या के कामकाज से बेख़बर रहते थे। नमाज़ के समय में आपको इस आलम (जगत) की ख़बर होती थी और वज़ू करके नमाज़ अदा फ़रमाते थे। बारह वर्ष तक आपकी यही हालत रही और उस ज़माने में आपकी ख़ूराक (आहार) बहुत कम थी।

**प्र. : आपके क्या अख़्लाक़ (सद्व्यवहार) थे?**

उ. : आप बहुत सच्चे और वादे के पक्के (वचन पालक) थे। ग़रीबों के ग़मख़ार (सहानुभूति कर्ता) और नादारों (दीन) के मदद्गार (सहायक), सख़ी (दानवीर), जवाँमर्द (वीर) हयादार (लज्जा - वान्), बड़े दानिश्मंद (बुद्धिमान), होशयार (सचेत), निहायत आबिद (उपासक), परहेंज़गर (संयमी) और अमानतदार थे। अर्थात् आपके अख़लाक़ वही थे जो रसूलुल्लाह सल्ला० के अख़लाक़ थे और आपके सिफ़ात (गुण) वही थे जो रसूलुल्लाह सल्ला० के सिफ़ात थे।

**प्र. : हज़रत ने अपने महेदी मौऊद (प्रतीज्ञात महेदी) होने का कब दाअवा फ़रमाया ?**

उ. : आपने चालीस वर्ष की उम्र (आयु) में ख़ुदा के हुक्म से अपने महेदी मौऊद होने का दावा (घोषण) फ़रमाया।

**प्र. : आपको ख़ुदा का हुक्म किस तरह हुआ करता था ?**

उ. : आपको जिब्रईल अले० के वास्ते (माध्यम) से तालीम नहीं होती थी बल्कि आपको अल्लाह तआला से बिला वास्ता (सीधा) तालीम होती थी। आप जो कुछ फ़रमाते और काम करते थे वह ख़ुदा के हुक्म से फ़रमाते और करते थे, जैसाकि आप से रिवायत (कथन) है कि मुझको हर रोज़ अल्लाह तआला से नई तालीम (शिक्षा) होती है और मेरे और अल्लाह तआला के बीज कोई वासता (माध्यम) नहीं है।



बिन किलाब बिन मर्रा बिन कअब बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन किनाना बिन ख़ुज़ेमा बिन महरका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन सअद बिन अदनान।

**प्र. : क्या आँहज़रत के माँ - बाप आँहज़रत सल्ला० के पैग़म्बर होने तक ज़िन्दा (जीवित) थे।**

उ. : नहीं, बल्कि आँहज़रत सल्ला० के माँ - बाप बचपन में ही मर गये थे।

**प्र. : फिर आँहज़रत सल्ला० की पर्वरिश (पालन पोषण) किसने की ?**

उ. : आप के चाचा अबू तालिब ने आपकी पर्वसिश की।

**प्र. : क्या अबूतालिब आपकी पैग़म्बरी के ज़माने में मौजूद थे ?**

उ. : मौजूद थे मगर उनका ईमान लाना साबित नहीं है।

**प्र. : आँहज़रत सल्ला० किस उम्र में पैग़म्बर हुए।**

उ. : चालीस बरस की आयु में पैग़म्बर हुए।

**प्र. : आँहज़रत सल्ला० के कुछ सिफ़ात (गुण) बयान किये जाऐं जिनमें आप मशहूर थे ?**

उ. : आप बहुत बड़े अक़्लमन्द (बुद्धिमान), सच्चे, आदिल (न्यायवान्), जवाँमर्द (वीर), परहेज़गार (सदाचारी) अफ़ीफ़ (शुद्ध), अमानतदार, हक कामों में मददगार, मेहरबान (दयालु) साहबे मुरव्वत (सुशील), अपने पराए के ग़मखार (सहानु भूतिकर्ता), ख़ता से दरगुज़र करने वाले (क्षमाशील) और सख़ी (दानी) थे। ग़रज हज़ारों खूबियां आप में मौजूद थी। हमेशा ख़ुदा की इबादत करते थे । रात दिन अल्लाह ही का ख़्याल रखते थे।

**प्र. : आपकी पैग़म्बरी के इब्तदई हालात क्या हैं ?**

उ. : आँहज़रत सल्ला० बहुत सच्चे ख़्वाब (स्वप्न) देखते थे जिनकी ताबीर (स्वप्न का अर्थ) बहुत ही साफ़ और रौशन होती थी और वही बात सामने आती थी जो आपको ख़्वाब में दिखाई जाती थी।

**प्र. : क्या यह अहकाम क़ुरआन और हदीस में मौजूद है ?**

उ. : क़ुरआने शरीफ़ में सारे अहकाम मौजूद है।

**प्र. : फिर अलमा ने इन अहकाम को क्यों नहीं बयान फ़रमाया?**

उ. : उलमा ने अक़ायद, इबादात और मुआमलात में बहुत कुछ प्रयास किया है और बहुत सी उलझनों को दूर किया मगर इन अहकाम की तरफ़ या तो ध्यान नहीं दिया या इस वजह से कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने उनकी दाअवत नहीं की है उनकी तफ़सील बयान नहीं की।

**प्र. : क्या इन अहकाम से हर हुक्म के लिये कुरआन की आयत मैजूद है?**

उ. : बेशक मौजूद है उसको आइंदा (अगामी) बयान करेंगे।

**प्र. : क्या महेदी अले० ने इन्हीं अहकाम की दाअवत की है?**

उ. : हाँ इन्ही अहकाम की दाअवत फ़रमाई है और इनको फ़र्ज़ (ईश्वरादिष्ट) क़रार दिया है।

**प्र. : आपका क्या नाम है और आप का क्या लक़ब है?**

उ. : आपका नाम मुहम्मद है और लक़ब महेदी है जैसा कि आँहज़रत सल्ला० ने सूचना दी है कि वह शख़्स जो मेरे बाद अल्लाह का ख़लीफ़ा होगा वह मेरा हमनाम (समनाम) है।

**प्र. : आपके माता पिता का क्या नाम है?**

उ. : ह० महेदी अले० की माता जी का नाम आमिना और पिताजी का नाम सैयद अब्दुल्लाह है और हदीसे सहीह में ज़िकर किया गया है कि महेदी अले० के माँ - बाप का यही नाम होगा।

**प्र. : ह० महेदी अले० का सिलसिलए - नसब (वंशावली) कहाँ पहुंचता है?**

उ. : हज़रत इमाम हुसेन रज़ी० के पास पहुंचता है।



है तो मुहम्मद सल्ला० पैग़म्बर हो गये। उनके पैग़म्बरी में शक (संदेह) नहीं। यह वही बुज़ुर्ग पैग़म्बर है जिसकी ख़ुश ख़बरी (शुभ सन्देश) तौरात और इंजील में अल्लाह ने दी है। अगर मैं ज़िन्दा (जीवित) रहता तो आपकी मदद करता । उसके बाद वरक़ा मर गये ।

**प्र. : सबसे पहले आँहज़रत सल्ला० पर कौन ईमान लाये ?**

उ. : सबसे पहले ह० ख़दीजतुल कुब्रा रज़ी० ईमान लाई। यह आँहज़रत सल्ला० की पहली बीबी (पत्नी) हैं। उनके बाद ह० अली कर्रमुल्लाहु वज्हहु ईमान लाये जो उस समये बहुत कम उम्र थे, मशहूर यह है कि आप सात आठ वर्षा के थे । बड़ी उम्र वाले मरदों में ह० अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी० सब से पहले ईमान लाये हैं। मशहूर है कि ह० अली रज़ी० ने कभी पूजा नहीं की ।

**प्र. : हज़रत उमर रज़ि० कब ईमान लाये ?**

उ. : आँहज़रत सल्ला० के पैग़म्बर होने के कोई पाँच वर्ष बाद ईमान लाये। ह० उमर और अबू जहल के ईमान लाने के लिए आँहज़रत सल्ला० अल्लाह तआला से दुआ करते थे । ह० उमर रज़ि० के लिये दुआ क़ुबुल हो गई और आप ईमान लाये उसके बाद लोगों में जोशे ईमान फैल गया और इस्लाम की क़ुव्वत (शक्ति) बढ़ने लगी।

**प्र. : हज़रत उसमान रज़ि० कब ईमान लाये ?**

उ. : ह० उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० भी आँहज़रत पर बहुत जल्द ईमान लाऐ।

**प्र. : ह० उसमान रज़ि० को ज़ुन् नूरैन क्यों कहते हैं ?**

उ. : आपको रसूलुल्लाह सल्ला० ने दो लड़कियां दी थीं। एक का नाम रुक़य्या रज़ि० और दूसरी का नाम कुलसूम रज़ि० है।

**प्र. : मक्के से आप मदीने को क्यों तश्रीफ़ ले गये ?**

उ. : जब मक्के में काफ़िर आपको कष्ट देने लगे तो अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि आप मदीना तश्रीफ़ ले जायें। आप मदीना चले गये।

होना ज़रूरी है क्योंकि अल्लाह तआला की ख़िलाफ़त और माअसियत (पाप) एक शख़्य मे जमा नहीं हो सकतीं बल्कि उसका हर तरह से पाक होना ज़रुरी है।

**प्र. : ख़लीफ़तुल्लाह में क्या सिफ़तें (गुण) होती है?**

उ. : उसकी सबसे बड़ी सिफ़त यह है कि ख़ता से माअसूम (निष्पाप) हो और महेदी अले० में यह सिफ़त मौजूद है।

**प्र. : ख़लीफ़तुल्लाह की क्या तारीफ़ है?**

उ. : उसकी तारीफ़ पहले बयान हो चुकी है कि उसमें उम्बिया की सिफ़ात होती है मगर इस जगह यह जान लेना चाहिये कि अल्लाह तआला के ख़लीफ़ों को अल्लाह तआला के असमा का इल्म (ज्ञान) होता है जैसा कि अल्लाह तआला ने आदम अले० के क़िस्से में बयान फ़रमाया है कि आप (आदम) को सब असमा की तालीम दी गई थी चाहे वह असमाए मख़लूक़ हों या असमाए ख़ालिक़ (बिधाता)। इस तरह की तालीम (शिक्षा) पैगम्बरों और अल्लाह के ख़लीफ़ों को हुआ करती है।

**प्र. : जो शख़्स माअसूम है क्या वह उस शख़्य से फ़ैज़ प्राप्त कर सकता है जो माअसूम नहीं है?**

उ. : नहीं प्राप्त कर सकता ।

**प्र. : उसकी क्या वजह (कारण) है?**

उ. : अगर माअसूम शख़्य उस शख़्स से जो माअसूम नहीं है तालीम पाएगा तो माअसूम के सब अहकाम (आदेशों) में भी ख़ता (अशुद्धि) का शुबह (आशंका) पैदा हो जायेगा और उस सूरत (दशा) में उसके कहने (कथन) की तस्दीक़ फ़र्ज़ न होगी।

**प्र. : महेदी अले० जब ख़ातिमे दीन हैं तो किस चीज़ को पूरी फ़रमायेंगे?**

उ. : हमारे पहले बयानों से तुमको मालुम हुआ होगा कि क़ुरआने मजीद में कई चीजों का बयान किया गया है मगर क़ुरआन के अहकाम (आदेश) चार



करने का हुक्म दिया है। आपकी शफ़ाअत से गुनाहगारों की बख़शिश (मुक्ति) होगी। आप साहबे मेराज हैं यानी आप आसमानों पर चढ़े और सिद्रतुल मुंतहा तक बल्कि उसके आगे भी तश्रीफ़ ले गये और जन्नत और दोज़ख़ को देखा। सही रिवायतों (कथन) से साबित है कि आपने ख़ुदा को भी देखा । आपकी शरीअत क़यामत (प्रलय) तक बाक़ी रहेगी। आपसे बड़े मुअजिज़े (चमत्कार) सादिर हुए।

**प्र. : सिद्रतुल मुंतहा किस मुक़ाम का नाम है और क्या चीज़ है ?**

उ. : सिद्रतल मुंतहा सातवें आसमान पर है और यह एक बेर का पेड़ है। शबे मेराज में आँहज़रत सल्ला० ने देखा कि एक चीज़ उसको ढापी हुई है मगर उसका हाल मालूम नहीं हुआ। जिब्रईल अलै० का यही मक़ाम है इसके उपर सैर करने (जाने) की जिब्राईल अलै० को इजाज़त नहीं है। इसी मक़ाम पर ह० जिब्राईल अलै० को अल्लाह तआला की तरफ़ से वही हुआ करती है।

**प्र. : मेराज के क्या माने हैं ?**

उ. : मेराज के माने (अर्थ) सीढ़ी हैं और चढ़ने के भी है।

**प्र. : इन शब्दों के क्या माने हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० को मेराज हुई है?**

उ. : उसके यह माने हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० बुलंदी पर जढ़े।

**प्र. : आप को किस महीने में और किस तारीख़ में मेराज हुई ?**

उ. : माहे रज्जब की २६ तारीख़ में मेराज हुई है।

**प्र. : क्या आँहज़रत सल्ला० को जिस्म (शरीर) के साथ मेराज हुई है ?**

उ. : हाँ जिस्म के साथ मेराज हुई है और अक्सर (अधिकतर) सहाबा का यही मज़हब (मत) है।

**प्र. : मेराज का क्या क़िस्सा है ?**

उ. : *तफ़सीर मआलिमुत् तंजील* में लिखा है कि अबूज़र रज़ी० ने रसूलुल्लाह सल्ला० से सुना है कि आप फ़रमाते थे कि यकायक मेरे घर की छत

**प्र. : विलायत के कितने क़िस्म हैं ?**

उ. : विलायत दो प्रकार की हैः विलायते आम्मा (साधारण) और विलायते ख़ास्सह (विशिष्ट)। विलायते आम्मा तो समझ में आ गई होगी मगर विलायते ख़ास्सह वोह है जो इबादत और मेहनत से प्राप्त नहीं होती, बल्कि यह विलायत उसी शख़्स को हासिल होती है जिसको अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल (अनुकम्पा) से इनायत (प्रदान) करता है। यह विलायत वहबी (ईश्वर दत्त) है कस्बी (जो मेहनत से हासिल हो) नहीं है। इस विलयात की हालत वही है जैसा कि नबुव्वत की हालत है। जिस तरह नबुव्वत इबादत और मेहनत से प्राप्त नहीं हो सकती उसी तरह यह विलायते ख़ास्सह भी इबादत और मेहनत से प्राप्त नहीं हो सकती। यह बरगुज़ीदा (महात्मा) शख़्स आँहज़रत सल्ला० का ताबे ताम होता है और आँहज़रत सल्ला० के कमालात का वारिस (जानशीन) होता है।

**प्र. : ताबे ताम किसको कहते है?**

उ. : ताबे ताम (पूणं रुप से अनुसरण करने वाला) वह शख़्स है जिसका अमल (कार्य) वही हो जो रसूलुल्लाह सल्ला० का अमल था और जिसका हाल वही हो जो रसूलुल्लाह सल्ला० का हाल था और जिसकी दाअवत (निमन्त्रण) वही हो जो रसूलुल्लाह सल्ला० की दाअवत थी।

**प्र. : जो शख़्स इस तरह रसूलुल्लाह सल्ला० की पैरवी करेगा तो उस से ख़ता (ग़लती) क्यों होगी ?**

उ. : वह ख़ता से मासूम (अप्रमाद) है। अल्लाह तआला की तरफ़ लोगों को बुलाता है जिस तरह रसूलुल्लाह सल्ला० अल्लाह की तरफ़ बुलाते थे। इसलिए उसके क़ौल और फ़ेल (वचन और कर्म) में कभी ख़ता नहीं होगी क्योंकि जो शख़्स यह दावा करे कि में पैग़म्बरों के समान अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ और उस दाअवे पर मोजिज़े (चमत्कार) भी बताता है तो उसकी तस्दीक़ (पुष्टि) करना और उस पर ईमान लाना फ़र्ज़ हो जाता है। फिर अगर उस से ख़ता होती है तो उस पर ईमान लाना फ़र्ज़ न होगा।



ने मेरा स्वागत किया। उस आसमान पर याहिया अलै० और ईसा अलै० से मुलाक़ात हुई। उन दोनों को मैंने सलाम किया उन्होंने सलाम का जवाब दिया और मरहबा कहा फिर मैं तीसरे आस्मान पर गया, यहाँ के लोगों ने भी मेरा स्वागत किया और ख़ुशी ज़ाहिर की। मैं उस आसमान पर यूसुफ़ अलै० से मिला, वह बहुत सुन्दर थे। मैंने उनको सलाम कहा युसुफ़ अलै० ने सलाम का जवाब दिया और मरहबा कहा। फिर मैं चौथे आसमान पर चढ़ा, वहां लोगों ने मुझे मरहबा कहा। उस आसमान पर इदरीस अलै० से मिला और उनको सलाम किया जिसका उन्होंने जवाब दिया और मरहबा कहा। फिर पांचवें आसमान पर चढ़ा, वहां के लोगों ने मेरा स्वागत किया। उस आकाश पर हारून अलै० से मिला और उनको सलाम किया उन्होंने सलाम का जवाब गिया और मरहबा कहा। फिर छटे आसमान पर गया, वहां के लोगों ने भी मेरा स्वागत किया और मूसा अलै० से मिला और उनको सलाम किया। मूसा अले० ने सलाम का जवाब दिया और मरहबा कहा। जब मैं अगे बढ़ा तो मूसा अलै० रोने लगे। उनसे रोने का कारण पूछा गया तो जवाब दिया कि मुहम्मद सल्ला० की उम्मत के लोग मेरी उम्मत से ज़्यादा जन्नत में दाख़िल होंगे। फिर मैं सातवें आसमान पर गया, यहां के लोगों ने मुझे मरहबा कहा। फिर इब्राहीम अलै० से मुलाक़ात हुई। मैं ने आपको सलाम किया और आपने मुझे सलाम का जवाब दिया और मरहबा कहा और इब्ने सालेह कहा । ह० आदम अले० और ह० इब्राहीम अलै० के सिवा सब पैग़म्बरों ने आपको नेकूकार (सदाचारी) भाई कह कर पुकारा। रसूलुल्लाह सल्ला० फ़रमाते हैं कि फिर मैं बैतुल माअमूर में गया जिब्राईल अलै० ने बयान किया कि यह बैतुल माअमूर है इसमें सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते हर रोज़ नमाज़ पढ़ते है और दूसरे दिन यह फ़िरिश्ते नही आते बल्कि दूसरे फ़िरिश्ते आते है और नमाज़ पढ़ते है। मतलब यह है जो फ़िरिश्ते इस मसजिद में एक बार आते है फिर वह फ़िरिश्ते दुबारा नहीं आते। यहां से सिद्रतुल मुंतहा के पास गया। उसके फल और पत्ते बड़े बड़े हैं। उस समय सिद्रतुल मुंतहा

**प्रशन : वली की क्या तारीफ़ (परिभाषा) है ?**

उत्तर : जिसको अल्लाह तआला से नज़दीकी (समीपता) प्राप्त है वही वली है।

**प्र. : अल्लाह तआला से नज़्दीकी किस काम के करने से प्राप्त होती है?**

उ. : हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० की पैरवी (अनुसरण करने) से होती है। जैसा - जैसा पैरवी बढ़ती जायेगी वैसा - वैसा अल्लाह से नज़दीकी ज़्यादा (अधिक) होती जायेगी।

**प्र. : वली कितने किस्म (प्रकार) के होते है ?**

उ. : दो प्रकार के: वली-ए-कामिल (संपूर्ण स्वामी) और वली-ए-नाक़िस (अपूर्ण स्वामी)। वली-ए-कामिल वह है जो ह० मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० की पैरवी में कामिल हो, और वली-ए-नाक़िस वह है जो ह० मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की पैरेवी में नाक़िस हो।

**प्र. : किन-किन चीज़ों में रसूलुल्लाह सल्ल० की पैरवी की ज़रुरत है ?**

उ. : आँहज़रत सल्ला० के क़ौल व फ़ेल व हाल (वचन, कर्म और दशा) की पैरवी ज़रुरी है। क़ौल की पैरवी करने के अर्थ यह है कि सच कहे और रसूलुल्लाह सल्ला० ने जिन कामों के करने का आदेश दिया है उन्ही कामों के करने का आदेश दें और जिन चीजों के न करने का आदेश दिया है अन चीजों से मना करें (रोकें)। फ़ेल (कर्म) की पैरवी करने का अर्थ यह है कि जो इबादत रसूलुल्लाह सल्ला० ने की है वही इबादत करें और जिस तरह रसूलुल्लाह सल्ला० मुआमला (व्यवहार) करते थै उसी तरह मुआमला करें। हाल (दशा) की पैरवी करने का अर्थ यह है कि रसूलुल्लाह सल्ला० की जो हालत थी वही हालत अपने में पैदा करें।

**प्र. : आँहज़रत सल्ला० की क्या हालत थी ?**

उ. : आपकी तीन हालतें हैं- बशरी,मलकी और हक़्क़ी। बशरी हालत का अर्थ यह है कि आपको भी बशरी (मानवीय) ज़रूरतें थी, मसलन खाना पीना सोना



**प्र. : इस हदीस से मालूम हो गया कि रसूलुल्लाह सल्ला० से अल्लाह तआला ने शबे मेराज में कलाम (बात) किया है, मगर आपने ख़ुदा को देखा भी है या नहीं ?**

उ. : अधिकतर सहाबा का यह कहना है कि आँहज़रत सल्ला० ने शबे मेराज में ख़ुदा को देखा है और हमारा मज़हब भी यही है।

**प्र. : क्या बाज़ सहाबा यह भी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने ख़ुदा को नहीं देखा ?**

उ. : हाँ, बाज़ सहाबा का यह मज़हब है कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने ख़ुदा को नहीं देखा । बीबी आयशा रज़ी० का यही मज़हब है । शेआ और मोतज़िला भी यही कहते हैं ।

**प्र. : आँहज़रत सल्ला० पर जो लोग ईमान लाये हैं उनको किस नाम से पुकारते हैं ?**

उ. : उनको रसूलुल्लाह सल्ला० के सहाबा कहते हैं ।

**प्र. : सहाबी की क्या तारीफ़ (व्याख्या) है ?**

उ. : सहाबी वह शख़्स (व्यक्ति) है जो रसूलुल्लाह सल्ला० से मिले और आप पर ईमान लाये और ईमान पर मरे।

**प्र. : सहाबा कितने क़िस्म (प्रकार) के हैं ?**

उ. : दो क़िस्म के हैं, महाजिरीन और अन्सार।

**प्र : उनकी क्या तारीफ़ है ?**

उ. : महाजिरीन वह असहाब हैं जो रसूलुल्लाह सल्ला० के पास रहने के लिये मक्के को छोडकर मदीने में आ गये और अन्सार वह असहाब हैं जिन्हों ने आपकी और आपके महाजिरीन सहाबा की ख़िदमत (सेवा) की।

**प्र. : सब असहाब में बुज़ुर्ग सहाबा कौन हैं ?**

उ. : वह सहाबा हैं जो बदर के युद्ध में रसूलुल्लाह सल्ला० के साथ काफ़िरों से लड़े हैं।

**प्र.** : **क्या यह लोग उन सहाबा और औलिया अल्लाह को जो ह० अली रज़ी० को पहेला ख़लीफ़ा नहीं मानते फ़ासिक़ कहते हैं?**

उ. : हाँ सब को फ़ासिक़ कहते हैं।

**प्र.** : **आँहज़रत सल्ला० की सब बीबियौं को भी बुरा भला कहते होंगे क्योंकि सब बीबियाँ हज़रत अली रज़ी० को पहेला ख़लीफ़ा नहीं मानती थीं?**

उ. : बेशक आँहज़रत सल्ला० की सब बीबियाँ हज़रत अली रज़ी० को पहला ख़लीफ़ा नहीं कहती थी उन सब को बुरा भला कहते हैं मगर उन सब मे हज़रत बीबी आइशा रज़ी० को बुहत बुरा कहते हैं और उनसे बुहत दुश्मनी रखते हैं क्योंकि आइशा रज़ी० ने हज़रत अली रज़ी० से जंग की है।

**प्र.** : **आँहज़रत सल्ला० की बीबियों में सब से बुज़ुर्ग कौन सी बीबी हैं ?**

उ. : बीबी खदीजतुल कुबरा रज़ी० हैं जो बीबी फ़ातिमतुज़ ज़हरा रज़ी० की माँ है।

**प्र.** : **उनके बाद कौनसी बीबी ज़्यादा बुज़ुर्ग हैं?**

उ. : बीबी आयशा सिद्दीक़ा रज़ी० हैं ।

**प्र.** : **ह० बीबी फ़ातितुज़ ज़हरा रज़ी० के क्या क्या फ़ज़ायल हैं ?**

उ. : बीबी फ़ातिमा रज़ी० की आँहज़रत सल्ला० ने बड़ी तारीफ़ की है और फ़रमाया है कि फ़ातिमा रज़ी० दुनिया की औरतों की सरदार हैं।



**प्र.** : **आँहज़रत सल्ला० ने अपना ख़लीफ़ा किस को बनाया ?**

उ. : यह सबित नहीं है कि आँहज़त सल्ला० ने किसी को अपना ख़लीफ़ा बनाया मगर आपने अपनी बीमारी के ज़माने में अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ी० को नमाज़ पढ़ाने की इजाज़त दी थी और अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ी० ने चंद नमाज़ें हज़रत सल्ला० के हुक्म से सब सहाबा को पढ़ाई। चूंकि आँहज़रत सल्ला० ने नमाज़ पढ़ाने के लिये अबूबक्र रज़ी० को अपना ख़लीफ़ा बनाया था इस लिये सब सहाबा ने आँहज़रत की रेहलत के बाद अबू बक्र रज़ी० को रसूलुल्लाह सल्ला० का क़लीफ़ा मान लिया और दीनी वा दुन्यावी (धार्मिक और सांसारिक) कामों में अपना हाकिम (शासक) बना लिया और इसी बात पर सब सहमत हुए कि आप रसूलुल्लाह सल्ला० के पहले ख़लीफ़ा हैं ।

**प्र.** : **अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ी० के बाद कौन ख़लीफ़ा हुए ?**

उ. : उमर रज़ी० को अबूबक्र सद्दीक़ रज़ी० ने अपना ख़लीफ़ा बनाया और अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ी० के बाद सब सहाबा ने उमर रज़ी० की ख़िलाफ़त पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया और हज़रत उमर रज़ी० खलीफ़ा हुए।

**प्र.** : **हज़रत उमर रज़ी० के बाद कौन ख़लीफ़ा हुए ।**

उ. : हज़रत उमर रज़ी० ने अपनी जिंदगी में फ़रमाया था कि आपस में मसालेहत के साथ किसी एक सहाबी को ख़लीफ़ा बना लिया जाये और छः सहाबी का नाम बयान फ़रमाया। उन छः सहाबियों ने इत्तेफ़ाक़ करके हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ी० को ख़लीफ़ा बनाया ।

**प्र.** : **छः सहाबा के क्या नाम हैं ?**

उ. : हज़रत उसमान, हज़रत अली अलमुरतुज़ा, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, तलहा, जुबेर और साद बिन अबी वक़्क़ास रज़िअल्लाहु अन्हुम।

**प्र.** : **हज़रत उसमान रज़ी० के बाद कौन ख़लीफ़ा हुए ?**

उ. : हज़रत अली बिन उबी तालिब ख़लीफ़ा हुए और मक्के और मदीने के सब सहाबा ने आप के ख़लीफ़ा होने पर इत्तिफ़ाक़ किया। मगर उसके बाद बाज़ सहाबा रज़ी० हज़रत अली रज़ी० से अलग हो गये और बहुत से झगड़े पैदा हो गये।

**प्र. : क्या सब बेहिश्ती (जन्नती) एक दरजे के होंगे ?**

उ. : नहीं, बल्कि उनमें से बाज़ बड़े मरतबे के होंगे और बाज़ कम दरजे के होंगे। सबसे बड़े दरजे के लोग पैग़म्बर हैं। उनके बाद सिद्दीक़ीन, औलिया, शोहदा और उलमा हैं और उनके बाद आम मोमिनीन हैं।

**प्र. : क्या बेहिश्त में अल्लाह तआला का दीदार भी होगा ?**

उ. : सही हदीसों से साबित हुआ है कि अल्लाह तआला को तुम आख़िरत में इस तरह देखोगे जिस तरह की तुम चौध्वीं रात के चाँद को देखते हो।

**प्र. : क्या जन्नत और दोज़ख़ को अल्लाह तआला हिसाब किताब के बाद पैदा करेगा या पैदा कर चुका है ?**

उ. : अल्लाह तआला ने जन्नत और दोज़ख़ को उसी वक़्त पैदा किया था जब ज़मीन और आसमान को पैदा किया था ।

**प्र. : क्या बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो यह एतेक़ाद रखते हैं कि जन्नत और दोज़ख़ को हिसाब किताब के बाद पैदा करेगा ?**

उ. : हाँ, फ़िरक़ा मोतज़िला बग़ौरा यही एतेक़ाद रखते है।

**प्र. : क्या इस क़िस्म का एतेक़ाद रखना दुरुस्त है या नहीं ?**

उ. : ऐसा एतेक़ाद रखना जायज़ नहीं है क्योंकि क़ुरआने मजीद में यही ज़िक्र किया गया है कि दोज़ख़ और जन्नत पैदा हो चके हैं।

**प्र. : अगर कोई शख़्स ऐसा ऐतेक़ाद रखेगा तो उसपर क्या हुक्म है?**

उ. : फ़ासिक़ हो जायेगा ।

**प्र. : क्या दोज़ख़ में केवल कुफ़्फ़ार जायेंगे या गुनहगार भी जायेंगे ?**

उ. : अहले सुन्नत कहते हैं कि काफ़िर और गुनाहगार दोज़ख़ में जायेंगे और गुनाहगार आँहज़रत सल्ला० की शफ़ाअत के बाद दोज़ख़ से निकाले जायेंगे। और महदवियों का यह मज़हब है कि दोज़ख़ काफ़िरों की जगह है क्योंकि अल्लाह तआला ने क़ुरआने मजीद में फ़रमाया है कि दोज़ख़ में वही जायेगा जिसने अल्लाह तआला को झुटलाया और अल्लाह तआला से मूँह फेर लिया है।



**प्र. : क्या उस ज़ालिम के हाथ पर बैअत करना ज़रुरी अम्र था ?**

उ. : ज़रुरी अम्र नहीं था, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ला० की ख़िलाफ़त जब हज़रत अली रज़ी० पर पूरी हो गई तो सलतनत बाक़ी रह गई और बादशह से बैअत वाजिब नहीं है और जब यह ज़ालिम बादशाह ख़ुदा और उसके पैग़म्बर का नाफ़रमान (विद्रोही) था तो ऐसे नापाक के हाथ पर बैअत किस तरह ज़रुरी होगी।

**प्र. : क्या यज़ीद कफ़िर था ?**

उ. : उसका कुफ़र साबित नहीं है। इमाम आज़म रज़ी० ने यज़ीद को काफ़िर नहीं कहा है और उसपर लानत भी नहीं की है। और हमारे मज़हब में भी उस पर लानत (फटकार) करने का साफ़ हुक्म नहीं है।

**प्र. : किसी मज़हब में उस पर लानत की गई है या नहीं ?**

उ. : इमाम शाफ़ई रज़ी० उसपर लानत करते हैं ।

**प्र. : क्या यज़ीद ने इमाम हुसैन रज़ी० और आपकी सब औलाद को शहीद कर दिया ?**

उ. : इमाम ज़ैनुल आबेदीन जो आपके बड़े फ़र्ज़न्द थे लड़ाई के समय बहुत बीमार थे इसलिये आपको इमाम हुसैन रज़ी० ने लड़ाई में शरीक होने का हुक्म नहीं दिया। इस तरह इमाम हुसैन के फ़र्ज़न्दों में से आप ही बच गये और सब शहीद हो गये। इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ी० की औलाद का सिलसिला अबतक बाक़ी है और क़यामत तक बाक़ी रहेगा।

**प्र. : क्या आदमी के मरने के बाद उससे क़ब्र में सवाल और जवाब भी होंगे?**

उ. : बेशक, आदमी के मरने के बाद क़ब्र में सवाल व जवाब होंगे। यानि दो फ़िरिश्ते क़ब्र में आयेंगे और यह सवाल करेंगे कि तेरा ख़ुदा कौन है और तेरा पैग़म्बर कौन है, और तेरा दीन क्या है। अगर मोमिन है तो यह जवाब देगा गि मेरा पर्वरदिगार ख़ुदा तआला है, उसका कोई शरीक नहीं हैं और पैग़म्बर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० है और मेरा दीन इस्लाम है। और जो काफ़िर है उसके जवाब में लग़्ज़िश होगी।

**प्र. : क़यामत के क्या माने हैं ?**

उ. : दुन्या जो तुमको इस वक़्त नज़र आती है एक दिन ऐसा होगा कि दुन्या ऐसी नहीं रहेगी बल्कि अपनी हालत को बदल देगी। आसमान टूट जायगा और सूरज की रोशनी जाती रहेगी। चाँद और सितारे बेनूर हो जायेंगे और अपनी जगह से गिर जायेंगे। ज़मीन पर ज़लज़ले आयेंगे। दरया सूख जायेंगे और पहाड़ रेज़ा - रेज़ा हो जायेंगे। यानि दुन्या और दुन्या की सब चीज़ें बिगड़ जायेंगी और सब चीज़ें एकदम फ़ना (नाश) हो जायेंगी। फ़िर अल्लाह तआला दूसरी मर्तबा दुन्या को पैदा करेगा और सब जीज़ें पैदा हो जायेंगी।

**प्र. : क्या क़यामत में सब लोग जमा होंगे और उनसे हिसाब - किताब भी होगा?**

उ. : सही हदीसों से साबित होता है कि एक बड़े मैदान मे सब लोग खड़े किये जायेंगे। उस दिन आफ़ताब बहुत नज़दीक हो जायेगा और बहुत सख़्त गरमी होगी। लोग अपने - अपने पसीनों में ग़ोते खायेंगे मगर जो नेक लोग हैं आराम से सहेंगे। हर एक पैग़म्बर अपनी - अपनी उम्मत की फ़िकर में रहेगा। हर आदमी को इस बात का यक़ीन हो जायेगा कि यह वही दिन है जिसकी हमारे पैग़म्बरों ने दुन्या में ख़बर दी थी। कुफ़्फ़ार गुम और मस्ती की हालत में रहेंगे। उसके बाद मीज़ान (तुला) क़ायम होगी और आमाल नामे तोले जायेंगे। जिनकी नेकियां तराज़ू मे झुक जायेंगी वह जन्नत में चले जायेंगे और जिनकी बुराईयाँ तराज़ू में झुक जायेंगी वो अज़ाब में फंस जायेंगे।

**प्र. : उस दिन कौन हिसाब लेगा ?**

उ. : ख़ुद अल्लाह जल्ले शानहू हिसाब लेगा।

**प्र. : क्या सब इन्सान जहाँ से उठाये जायेंगे वहीं खड़े रहेंगे या उनके खड़े रहने की दूसरी जगह होगी ?**

उ. : इन्सान जहाँ से उठाये जायेंगे वहाँ से वोह चलाए जायेंगे और पूले सिरात से गुजरेंगे और मैदाने क़यामत में खड़े किये जायेंगे।



**प्र. : सिरात क्या चीज़ है ?**

उ. : सिरात एक पुल है जो दोज़ख़ पर रखा जायेगा। उस पुल से सब लोगों को गुज़रना होगा। मोमिन भी उस पर से गुज़रेंगे और काफ़िर भी। पैग़म्बर भी उस पर से गुज़रेंगे। मगर जब काफ़िर उस पर से गुज़रेंगे तो उनको बहुत तकलीफ़ होगी बल्कि बाज़ दोज़ख में गिर पड़ेंगे और मोमिन आसानी के साथ गुज़रेंगे। उनमें बाज़ बिजली की तरह कून्द कर निकल जायेंगे और बाज़ हवा की तरह तेज़ी से चले ज़ायेंगे।

**प्र. : सिरात पर से गुज़रने के बाद लोग कहाँ जायेंगे ?**

उ. : जो लोग मोमिन हैं हिसाब - किताब के बाद जन्नत में जायेंगे और जो लोग काफ़िर हैं दोज़ख़ में जायेंगे।

**प्र. : जन्नत और दोज़ख़ क्या चीज़ें हैं ?**

उ. : अल्लाह तआला ने अपने पाक बन्दों और मोमिनों के लिये एक बहुत बड़े आराम और राहत की जगह तैयार रखी है उसमें सब क़िसम की ख़ुशी और आराम की चीजें मौजूद हैं। उम्दा उम्दा मकान और निहायत खुशनुमा बाग़ ख़ुश्गवार नहरें और ख़ूबसुरत हौज़ हैं और हज़ारों क़िसम की ग़िजायें और मेवे और क़िसम-क़िसम के आराहश की चीज़ें और उम्दा (उत्तम) उम्दा लिबास हैं। ख़ूबसूरत ख़ादिम मर्द और औरतें निहायत फ़रमांबरदार हैं, जो लोग जन्नत में दाख़िल होंगे उनकी ख़ुशी से ख़िदमत करेंगे। दोज़ख़ रंज व ग़म का मकान है। उसमें चारों तरफ़ आग सुलगी हुवी है जो दुन्या की आग से बहुत ज़्यादा तेज़ हैं। हज़ारों क़िस्म के सांप बिच्छु और ज़हरीले जानवर आग में पले हुए बेहिसाब मौजूद हैं। उनके जुस्से (शरीर) बहुत ज़बरदस्त हैं। यह सब दोज़ख़ियों के लिये पैदा किये गये हैं और काफ़िरों का रास्ता देख रहें है।

**प्र. : क्या जन्नती लोग जन्नत मे और दोज़ख़ी लोग दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे।**

उ. : बेशक हमेशा रहेंगे।

**प्र. : क्या जन्नतियों और दोज़ख़ियों को मौत नहीं है ?**

उ. : वह सब हमेशा ज़िन्दा रहेंगे उनके लिये मौत नहीं है।

**प्र. : यज़ीद की बादशाही से मुसलमान क्यों खुश नहीं थे ?**

उ. : यज़ीद अल्लाह तआला और उसके रसूल के अहकाम पर अमल नहीं करता था और तारीखों (इतिहास) में लिखा हुआ है कि वह शराब भी पीता था ज़िना (बलात्कार) भी करता था और नाहक़ व नारवा (अनूचित) सहाबा पर ज़ुल्म (अत्याचार) करता था। फिर उसकी बादशाही में मुसलमान क्यों कर ख़ुश होंगे।

**प्र. : क्या यह नालायक - सहाबा रज़ी० पर ज़ुल्म करता था ?**

उ. : उफ़सोस है कि यज़ीद ने ऐसे सहाबी को मार डाला जो रसूलुल्लाह सल्ला० का बड़ा प्यारा बल्कि फ़र्ज़न्द था और उस प्यारे सहाबी के बच्चों को भी मार डाला।

**प्र. : वह कौन हैं ?**

उ. : हज़रत इमाम हुसैन रज़ी० और उनके बच्चे ।

**प्र. : हज़रत इमाम हुसैन रज़ी० किसके फ़र्ज़न्द (पुत्र) हैं ?**

उ. : हज़रत अली रज़ी० के फ़र्ज़न्द हैं और आपकी माँ बीबी फ़ातिमतुज़ ज़हरा रज़ी० हैं जो आँहज़रत सल्ला० की प्यारी बेटी हैं। इस तरह हज़रत इमाम हुसैन रज़ी० आँहज़रत सल्ला० के नवासे हैं।

**प्र. : क्या उस ज़ालिम ने ह० इमाम हुसैन रज़ी० को शहीद कर दिया?**

उ. : हाँ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी० को और आपके नौजवान फ़र्ज़न्द अली अकबर और आपके प्यारे भाई ह० अब्बास और दूसरे भाईयों को, यानि हज़रत हुसैन के सारे परिवार को शहीद कर दिया।

**प्र. : उसकी कोई वजह भी थी?**

उ. : कोई वजह नहीं थी बस यह दुश्मनी थी कि हज़रत इमाम हुसैनि रज़ी० ने उस नापाक यानि यज़ीद के हाथ पर बैअत नहीं की।

**प्र. : क्या दूसरे सहाबियों ने उसके हाथ पर बैअत की थी ?**

उ. : हाँ, ज़ुल्म के ख़ौफ़ से बैअत करली थी।



**प्र. : काफ़िर और मुश्रिक तो दोज़ख़ में जायेंगे मगर क्या उनके बच्चे भी दोज़ख़ में जायेंगे ?**

उ. : बहुत से आलिमों का यही कहना है कि मुश्रिकों के बच्चे बी दोज़ख़ में जायेंगे और हमारा भी यही मज़हब है।

**प्र. : बड़े और छोटे गुनाह जिन लोगों से हो गये हैं उनकी रिहाई (मुक्ति) की क्या सूरत हैं ?**

उ. : उनपर वाजिब है कि सच्चे दिल सै तौबा करें उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनकी तौबा क़ुबूल करलेगा ।

**प्र : अगर कोइ गुनाहगार मोमिन तौबा न करके मर जाये तो क्या अल्लाह तआला उसके गुनाह बख़श देगा?**

उ. : क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं कभी शिर्क करने वाले को नहीं बख़्शूंगा और उसके सिवा जिसको चाहूंगा उसके सब गुनाह बख़श दूंगा।

**प्र. : रसूलुल्लाह सल्ला० अल्लाह तआला के पास किन लोगों की शफ़ाअत करेंगे?**

उ. : रसूलुल्लाह सल्ला० उन लोगों की शफ़ाअत करेंगे जिनसे बड़े गुनाह सादिर हुए हैं।

**प्र. : बड़े गुनाह क्या है ?**

उ. : बड़े गुनाह बहुत से हैं । जैसा कि किसी को बेसबब मार डालना, चोरी करना, दुसरे की औरत से हराम करना, लिवातत (गुद मैथुन) करना, किसी औरत से हराम करना, शराब पीना, सूद खाना, किसी नेक औरत पर तोहमत (आरोप) लागना, झूठा बोलना वग़ैरा। इन गुनाहों को गुनाहे कबीरा कहते हैं। ह० इबने अब्बास रज़ी० बड़े गुनाह सत्तर (७०) गिने हैं।

**प्र. : क्या ऐसे गुनाह करने वाला काफ़िर नहीं होता है ?**

उ. : काफ़िर नहीं होता और यही हमारा मज़हब है। मगर दूसरे मज़हब वालों

**प्र. : हज़रत अली रज़ी० से बैअत करने के बाद जो सहाबा अलग हो गये उनके क्या नाम हैं ?**

उ. : तलहा रज़ी०, ज़ुबैर रज़ी० ।

**प्र. : उनके अलग होजाने की क्या वजह थी ?**

उ. : हज़रत उसमान रज़ी० के शहीद हो जाने के बाद आपको जिन लोगों ने शहीद किया वह हज़रत उसमान रज़ी० के बदले में नहीं मारे गये।

**प्र. : क्यूं नहीं मारे गये ?**

उ. : जिन लोगों ने हज़रत उसमान रज़ी० को शहीद किया था उनका पूरा पता नहीं मिला। अगरचे हज़रत अली रज़ी० ने उनकी बहुत तलाश की और बहुत कोशिश की।

**प्र. : किन लोगों ने हज़रत उसमान रज़ी० को शहीद किया ?**

उ. : यह मिसरी लोग थे।

**प्र. : क्या यही सबब (कारण) था जो तल्हा रज़ी० और ज़ुबैर रज़ी० हज़रत अली रज़ी० से जुदा हो गये ?**

उ. : हाँ यही सबब था और हज़रत मआविया इब्ने अबी सुफ़यान ने जो शाम के बादशाह थी उसी वजह से आपके हाथ पर बैअत नहीं की।

**प्र. : क्या तलहा और ज़ुबैर रज़ी० का अलग हो जाना और मुआविया का हज़रत अली रज़ी० से बैअत न करना दुरुस्त (उचित) था ?**

उ. : हरगिज़ नहीं ।

**प्र. : उसकी क्या वजह है ?**

उ. : हज़रत अली रज़ी० के ख़लीफ़ा होने पर जब मुहाजिरीन और अनसार ने इज्माअ कर लिया था और तलहा व ज़ुबैर रज़ी० भी उस इज्माअ में शरीक थे तो फ़िर उन दोनों सहाबा को हज़रत अली रज़ी० से अलग होने का हक़ नहीं था और न हज़रत उस्मान रज़ी० के ख़ूनियों को मांगने का उन्हें मन्सब



**प्र. : क्या शिआ मज़हब वाले हज़रत अली रज़० को ख़लीफ़ा कहने पर बस करते हैं या और बातों में भी झगड़ते हैं ?**

उ. : हां दूसरी बातों में भी झगड़ते हैं। वह कहते हैं कि ह० अली रज़ी० रसूलुल्लाह सल्ला० के बराबर हैं।

**प्र. : क्या यह लोग हज़रत अली रज़ी० से किसी तरह का गुनाह न होने के मोतक़िद है ?**

उ. : ह० अली रज़ी० को मासूम कहते हैं बल्कि ह० अली की औलाद को भी मासूम कहते हैं ।

**प्र. : क्या क़यामत तक ह० अली रज़ी० को जो औलाद होगी वह सब मासूम हैं?**

उ. : ऐसा नहीं है। उनका बयान है कि बाराह इमाम मासूम हैं। उनके नाम हैं:- ह० अमीरूल मोमिनीन अली, ह० इमाम हसन, ह० इमाम हुसैन, ह० हमाम ज़ैनुल आबेदीन, ह० इमाम बाक़र, ह० इमाम जाफ़र सादिक़, ह० इमाम मूसा काज़िम, ह० इमाम अली बिन मूसा रज़ा, ह० इमाम मुहम्मद जवाद, ह० इमाम अली अज़् ज़की, ह० इमाम असकरी, ह० इमाम मुहम्मद रज़ी अल्लाहु अन्हुम। इमाम मुहम्मद को महेदी कहते हैं और उनको ज़िन्दा मानते हैं कि यह छिपे हुए हैं और अख़ीर ज़माने में ज़ाहिर हो जायेंगे।

**प्र. : इन इमामों के माअसूम होने पर कोइ दलील भी बयान करते हैं?**

उ. : क़ुरआन, हदीस और हज्माए उम्मत से कोइ दलील नहीं बयान करते और बुहत सी बेकार बातें कहते हैं जिन से उन (इमामों) का माअसूम होना साबित नहीं होता।

**प्र : जिसने अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ी० को पहेला ख़लीफ़ा नहीं माना है या ह० अली रज़ी० से लड़ाइ झगड़ा किया है उस पर क्या हुक्म करते हैं?**

उ. : जिसने ह० अली रज़ी० को रसूलुल्लाह सल्ला० का पहेला ख़लीफ़ा नहीं माना है उसको फ़ासिक़ कहते हैं और जिसने अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ी० से जंग की है उसको काफ़िर कहते हैं। *मआज़िल्लाह*

प्र. : यह सहाबा गिनती में कितने हैं ?
उ. : यह तीन सौ तेरह (३१३) शख़्स थे।

प्र. : फिर उन सहाबा में कौन से सहाबा ज़्यादा बुज़ुर्ग हैं ?
उ. : दस सहाबी हैं जिनको अश्राह मुबश्शराह (दस शुभ सूचित) कहते हैं।

प्र. : उनके नाम क्या हैं?
उ. : हज़रत अबूबक्र सिद्दीक, उमर बिन अलख़त्ताब, उस्मान बिन अफ़्फ़ान, ह० अली इब्न अबी तालिब, तलहा, ज़ुबैर, अब्दुर रहमान बिन औफ़, साअद बिन वक़्क़ास, सईद बिन ज़ैद, अबू उबैदाह बिन अलजर्राह रज़िअल्लाहु अन्हुम ।

प्र. : उन सहाबा को मुबश्शराह क्यों कहते हैं ?
उ. : आँहज़रत सल्ला० ने उनकी शान में जन्नत (स्वर्ग) की बशारत (शुभ सूजना) दी है।

प्र. : उनके सिवाय किसी और सहाबी की शान में बी जन्नत की ख़ुशख़बरी दी है?
उ. : हाँ, बीबी फ़ातिमा रज़ी०, ह० इमाम हसन रज़ी० और ह० इमाम हुसैन रजी० की शान में भी जन्नत में दाख़िल होने की खुशख़बरी दी है।

प्र. : उन तेरह (१३) सहाबा में ज़्यादा बुज़ुर्ग कौन हैं ?
उ. : आँहज़रत सल्ला० के ख़लीफे हैं ।

प्र. : ह० रसूलुल्लाह सल्ला० के कितने ख़लीफे हैं और उनके क्या नाम हैं ?
उ. : ह० रसूलुल्लाह सल्ला० के चार ख़लीफ़े हैं । अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी०, उमर बिन अलख़त्ताब रज़ी० उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ी० और अली बिन अबी तालिब रज़ी०।

प्र. : क्या यह चारों ख़लीफ़े गुनाह से मासूम (निष्पाप) हैं ?
उ. : हमारा यह एतिक़ाद है कि मासूम नहीं हैं क्योंकि उनके मासूम होने की कोई दलील (तर्क) नहीं है।



# अल अक़ाइद

## (दूसरा भाग)

### कमसिन बच्चौं की शिक्षा के लिये

लेखक

**ह० बहरूल उलूम अल्लामा सैयद अशरफ़ शम्सी रह०**

अनुवादक

**शेख़ चाँद साजिद**

एम.ऐ, एम. फ़िल (उस्मानिया)

**अल्लामा शम्सी रिसर्च अकाडमी**

१-६-८०६, महेदी मन्ज़िल, दायरा मुशीराबाद, हैदराबाद - ५०००२०.

को एक चीज़ ढ़ंकी हुई थी। दूसरी हदीस में है कि रौशन पर्वाने (प्रकाशित पतिंगे) इस पेड़ को घेरे हुए थे। लेखक कहता है कि यह सब फ़िरिश्ते थे। आँहज़रत सल्ला० फ़रमाते है कि इस जगह मुझ पर मेरे पर्वरदिगार ने वही की और हर रोज़ पचास नमाज़ें फर्ज़ हुई। जब में उसके बाद मूसा अलै० के पास गया तो मूसा अलै० ने पूछा कि आपकी उम्मत पर क्या फ़र्ज़ (ईश्वरादिष्ट कर्म) हुआ मैंने कहा पचास मनाजें फर्ज़ हुई। मूसा अलै० ने कहा कि मैंने बनी इसराईल को शरई अहकाम (धर्मिक आदेश) में आज़माया (परीक्षा ली) है और वह बहुत क़वी (बलवान) थे मगर उन्होंने ख़ुदा के अहकाम की पूरी ताअमील (प्रतिपालन) नहीं की और आपकी अम्मत ज़ईफ़ और कमज़ोर है उनसे इस फर्ज़ की पाबन्दी (प्रतिबन्ध) नहीं हो सकेगी, आप फिर ख़ुदा से अर्ज़ (निवेदन) करके इन नमाज़ों को कम कराईये। आँहज़रत अल्ला० पल्टे और कमी की दरख़्वास्त (प्रार्थना) की उसके बाद पाँच नमाजें कम हो गयीं। फिर हज़रत सल्ला० मूसा अलै० से मिले और बतलाया कि पाँच नमाज़ों कम हुई। मूसा अलै० ने कहा कि फिर तश्रीफ़ ले जाईये और कम कराईये, आप फिर तश्रीफ़ ले गये और नमाज़ें कम कराई। इस प्रकार आपने मूसा अलै० की कोशिश (प्रयास) से इतनी नमाज़ें कम कराई की पाँच नमाज़ें बाक़ी रह गई। इसके बाद भी मूसा अलै० ने कम कराने की तर्ग़ीब (सलाह) दी मगर हज़रत सल्ला० ने उज़्र (आपत्ति) किया कि मैं बार - बार अर्ज़ करने से शर्माता हूँ। इस तरह पाँच नमाज़ें हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० पर और आपकी उम्मत पर फ़र्ज़ रहीं। आँहज़रत सल्ला० फ़रमाते हैं कि मैंने जन्नत (स्वर्ग) की सैर की । अबू दजाना से रिवायत है कि आप उस जगह से बी ऊपर चढ़े थे और ऐसी जगह पहुँचे थे जहां क़लम (लेखनी) की आवाज़ आती थी और ह० अनस बिन मालिक रज़ी० की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ला० जब सिद्रतुल मुंतहा के पास पहुँचे तो आप फ़रमाते हैं कि जब्बार (ईश्वर का एक नाम) मेरे नज़दीक (समीप) हो गया और फिर मुझ पर वही की।



वग़ैरह मगर बात यह थी कि आप अपनी ख़हिश (इच्छा) से कम खाते पीते थे और ख़ाहिश से कम आराम (विश्राम) फ़रमाते थे और दूसरी जरूरतें भी इसी तरह की थीं। दूसरी हालत मलकी (फ़िरिश्तों जैसी) है जिसका अर्थ यह है कि रसूलुल्लाह सल्ला० पर वही होती थी यानी आप फ़िरिश्तों से बातचीत करते थे और फ़िरिश्ते आपको दिखाई देते थे और आपके पास आते जाते थे। आप का शरीर सफ़ाई और पाकी (निर्मलता और पवित्रता) में फ़िरिश्तों के शरीर के बराबर बल्कि बढ़कर था इसीलिये आपने आसमानों की सैर की और जिब्रईल अले० जिस जगह नहीं जा सकते थे उस जगह हज़रत पहुंचे थे। आप की तीसरी हालत इक़्की (ईश्वरीय) है जिसका अर्थ यह है कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने ख़ुद फ़रमाया है कि मुझे अल्लाह तआला के साथ ऐसी नज़दीकी हो जाती है कि उस जगह कोई मुक़र्रब (समीपस्थ) फ़िरिश्ता और बड़ा पैग़म्बर नहीं पहुंच सकता, और सहीह हदीसों (आँहज़रत के शुद्ध प्रवचन) में ज़िक्र (वर्णन) किया गया है कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने मेराज की रात में ख़ुदा को देखा है और हमारा मज़हब भी यही है। ग़रज़ (अर्थात) इन तीनों हालतों में जिसने बराबर पैरवी की वह कामिल वली है और जिसने बराबर पैरवी नहीं की वह नाक़िस रह गया। ऐसा शख़्स (व्यक्ति) वलीये कामिल नहीं है।

**प्र. : हज़रात औलियाए कामिलीन (संपूर्ण स्वामियों) में सब से बड़ा और साहबे मर्तबा (प्रतिष्ठित) वली कौन है?**

उ. : वह वली सब औलिया - अल्लाह में बुज़ुर्ग है जो ख़ुद काकिल हो और दूसरों को अपनी शिक्षा से कामिल करदे।

**प्र. : क्या हर इन्सान अल्लाह तआला की इबादत करने और ख़ुदा की राह (मार्ग) में मेहनतें (प्रयास) करने और ज़्यादा रियाज़त (तपस्या) करने से विलायत (वली का दर्जा) हासिल कर सकता है ?**

उ. : इबादत और ख़ुदा की राह में मेहनत करने से आम (साधारण) विलायत प्राप्त होने की आशा की जा सकती है, मगर ख़ास (विशिष्ट) विलायत प्राप्त नहीं होती।

ख़ुल गई और जिब्राईल उतरे और मेरे सीने को चीरा और ज़मज़म के पानी से उसको धो दिया और एक तश्त (थाली) लाये जो ईमान और हिक्मत से भरा हुआ था कहा यह ईमान और हिक्मत है और मेरे सीने में डाल दिया और उसको बंद कर दिया। दूसरी रिवायत में है कि ह० रसूलुल्लाह सल्ला० हतीम (काबे का एक भाग) में थे आँह़ज़रत सल्ला० का सीना यहीं चीरा गया और नूर व ईमान से भी पवित्र सीना यहीं भरा गया। फिर बुर्राक़ लाई गई जिसका रंग सफ़ेद था. उसका क़द व क़ामत (डील-डौल) ख़च्चर से छोटा था। यह मर्कब (सवारी) ऐसा तेज़ रफ़्तार (शीघ्रगामी) था कि उसका क़दम उस जगह पड़ता था जहाँ उसकी नज़र पड़ती थी। ह० रसूलुल्लाह सल्ला० फ़रमाते है कि मैं बुर्राक़ पर सवार हुआ और जिब्राईल अले० के साथ बैतुल मुक़द्दस गया और बुर्राक़ को बैतुल मुक़द्दस के उस हल्क़े से बांध दिया जिससे अंबिया अलै० अपनी सवारियों को बांधते थे और बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हुआ और सब बैग़म्बरों के साथ दो रकाअतें (नमाज) पढ़ी। फिर जिब्राईल अलै० ने मेरे सामने दो कटोरे पेश किये जिनमें से एक में दूध था और दुसरे में शराब थी। मैंने उस कटोरे को ले लिया जिसमें दूध था। जिब्राईल अले० ने कहा कि या मुहम्मद तुमने फ़ितरत (प्रकृति) को चुना है। फिर मैं जिब्राईल के साथ दुन्या के आकाश पर गया और आकाश पर पहुँचा वहाँ आदम अलै० से मुलाक़ात हुई। मैं ने सलाम किया मुझे आदम अले० ने सलाम का जवाब दिया और मरहबा (शुभागमन) कहा और नबी सालेह और ईबने सालेह से ख़िताब फ़रमाया। मैनें पूछा यह कौन है? जिब्राईल अलै० ने कहा कि यह आदम अलै० आपके बाप हैं। आदम अलै० के दोनों तरफ़ दो जमाअतें (समूह) रूहानियों (आत्माओं) की थीं । जब वह दाहनी तरफ़ की जमाअत को देखते थे तो हंसते और ख़ुश होते थे और जब बाईं ओर की जमाअत को देखते थे तो रोते थे। मैंने जिब्राईल अलै० से उनकी कैफ़ियत (विवरण) पूछी तो जवाब दिया कि दाहनी ओर की जमाअत के लोग अहले जन्नत (स्वर्गीय) हैं और बाई ओर की जमाअत के लोग अहले दोज़ख़ (नरक वाले) हैं। फिर मैं दूसरे आसमान पर गया वहां के लोगों



**प्र : क्या कोई शख़्स रसूलुल्लाह सल्ला० के बाद भी साहिबे दाअवत पैदा होगा?**

उ. : बेशक पैदा होगा।

**प्र. : क्या ऐसे शख़्स के पैदा होने की रसूलुल्लाह सल्ला० ने ख़बर (सूचना) दी है ?**

उ. : बेशक आँह़ज़रत सल्ला० ने ऐसे शख़्स के पैदा होने की ख़बर दी है और फ़र्माया है कि मेरे बाद मेरी उम्मत की हिदायत (निदेश) के लिये एक शख़्स अल्लाह का ख़लीफ़ा पैदा होगा और उसका लक़ब (पदवी) महेदी है तुम लोगों पर *फ़र्ज* हैं कि उसके हाथ पर बैअत करो। यह हदीस किताब *सुनन् इब्ने माजा* में ह० सूबान रज़ी० से मरवी (वर्णन की हुई) है और *मिश्कात शरीफ़* में इब्ने अब्बास रज़ी० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने फ़रमाया है कि मेरी उम्मत क्योंकर हलाक होगी जबकि मेरी उम्मत के पहले हिस्से में मैं मौजूद हूँ और मेरी उम्मत के आख़री (अन्तिम काल) हिस्से में ईसा अले० आयेंगे और मेरी उम्मत के दरमियानी हिस्से (मध्यकाल) में महेदी अले० होंगे और *अबू दाऊद* में रिवायत है कि महेदी अले० (के अख़लाक़) मेरे ख़ुलक़ (सदाचार) के समान होंगे, और ह० अली रज़ी० से रिवायत है कि महेदी अले० पर दीन ख़त्म हो जाएगा यानि महेदी अहकामे दीन (धार्मिक आदेशों) को ख़त्म (पूर्ण) करेगा। ग़रज़ इस तरह की बहुत सी रिवायतें (वर्णन) मोजूद हैं जिन से साबित होता है कि रसूलुल्लाह सल्ला० के बाद ख़ुदा का एक ख़लीफ़ा पैदा होगा और अल्लाह की तरफ़ लोगों को बुलाएगा और दीन उसी पर पूरा होगा।

**प्र. : क्या रसूलुल्लाह सल्ला० ने यह भी सूचना दी है कि यह शख़्स माअसूम (अप्रमाद/निष्पाप) होगा ?**

उ. : आँह़ज़रत सल्ला० ने यह सूचना दी है कि यह शख़्य जिसका लक़ब महेदी है मेरी संतान से होगा मेरे क़दम (पद) पर चलेगा और कभी ख़ता नहीं करेगा। इससे महेदी अले० का माअसूम होना साबित है और यह भी फ़रमाया है कि महेदी अले० अल्लाह के ख़लीफ़ा हैं और उनका माअसूम

**प्र. : पैग़म्बर होने के बाद रसूलुल्लाह सल्ला० कितने बरस मक्के में ठहरे रहे।**

उ. : आप दस वर्ष ठहरे रहे।

**प्र. : मदीने में कितने वर्ष रहे ?**

उ. : आप तेरह वर्ष मदीने में रहे।

**प्र. : क़ुरआन शरीफ़ कितने वर्ष मे आप पर उतरा ?**

उ. : २३ वर्ष में ।

**प्र. : क्या उस ज़माने में फिर कभी आप मक्के को तशरीफ़ ले गये थे ?**

उ. : हाँ गये थे। कुफ़्फ़ार ने आपको रोका मगर सुलह (मेल) हो गई और दूसरे साल आपने हज्ज किया। इस्लाम की क़ुव्वत बढ़ गई मक्का आपके कब्ज़े में आ गया और सब मुसलमान हो गये।

**प्र. : मक्के पर आपका कब्ज़ा हो जाने के बाद आप मक्के में ठहरे या नहीं ?**

उ. : आँहज़रत सल्ला० मक्के में नहीं रहे और मदीने को तशरीफ ले गये और वहीं रेहलत की (स्वर्गवास हुए) आपका रौज़ए मुबारक (समाधि) भी मदीने में है।

**प्र. : रसूलुल्लाह सल्ला० की रेहलत के समय आपकी कितनी बीवियां थीं।**

उ. : नौ (९) थीं.।

**प्र. : उनके नाम क्या हैं ?**

उ. : जुवेरिया, आयशा, ज़ैनब, हफ़सा, उम्मे सल्मा, उम्मे हबीबी, सौदह बिंते जमआ, मैमूना, सेफ़िया।

**प्र. : ह० मुहम्मद सल्ला० के क्या - क्या फ़ज़ाएल (प्रतिष्ठा) हैं ?**

उ. : ह० मुहम्मद सल्ला० ख़ातिमुल अंबिया हैं यानि आपके बाद कोई पैग़म्बर जन्म नहीं लेगा जो साहबे शरीअत हो। आप सब पैग़म्बरों में बुज़ुर्ग (प्रतिष्ठित) हैं बल्कि सबके सरदार हैं। आप साहबे शफ़ाअत हैं यनि अल्लाह तआला ने आपको गुनाहगारों (पापियों) की शफ़ाअत (अभिस्ताव)



प्रकार के हैः अक़ायद, इबादात, मुआमलात और एहसान। **अक़ायद** वह चीज़ें हैं जिनका बयान पहले हो चुका है, जैसा कि अल्लाह तआला एक है उसका कोई शरीक (साझी) और मिस्ल (समान) नहीं है। वह आलिम (सर्वज्ञ) है और क़ादिर (सर्व शक्तिमान) है, ज़िन्दा है, सुनता है, देखता है, कलाम (बात) करता है और सब चीज़ों का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है। इन चीज़ों का तफ़सीली बयान किया गया है। **इबादात** का मतलब नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात और जहाद वग़ैरह है। **मुआमलात** का मतलब बेचना, ख़रीदना, इक़रार करना (स्वीकृति), गवाही (साक्ष्य) देना, हिबा (उपहार विलेख), शुफ़आ (हक़ेशफ़ा), वकालत और हवालत वग़ैरह है। **एहसान** का मतलब यह है कि अल्लाह की ऐसी इबादत करो कि अल्लाह तआला को तुम देख रहे हो और अगर यह न हो सके तो यह ख़याल (कल्पना) करो कि अल्लाह तआला तुम को देख रहा है। आँहज़रत सल्ला० ने अक़ायद, इबादात और मुआमलात के अहकाम की लोगों को तालीम दी और उलको ख़ूब समझाया है मगर एहसान के अहकाम की (आम) दाअवत नहीं की। इस तरह दीन का एक भाग एहसान है उसके अहकाम को महेदी अले० ने बयान फ़रमाया है।

**प्र. : एहसान के क्या - क्या अहकाम है?**

उ. : तर्के दुन्या (दुन्या से प्रेम को त्यागना), सुहबते सादिक़ीन (सत्यनिष्ठ मनुष्यों की संगति), उज़लत अज़ ख़ल्क़ (जनता से अलग रहना), ज़िक्रे कसीर (हमेशा अल्लाह को याद करना), तलबे दीदारे ख़ुदा (ख़ुदा के दर्शन की इच्छा) तवक्कुल (ख़ुदा पर पूर्ण विश्वास), हिजरत (प्रवास) और उश्र यानि अपनी आमदनी का दसवाँ अंश ख़ुदा की राह में ख़र्च करना वग़ैरह।

**प्र. : क्या इन अहकाम को रसूलुल्लाह सल्ला० ने बयान नहीं फ़रमाया था?**

उ. : आँहज़रत सल्ला० ने इन अहकाम को बयान फ़रमाया है मगर इन अहकाम के फ़र्ज़ और वुजूब (अनिवार्यता) को ज़ाहिर नहीं फ़रमाया और इनकी दाअवत नहीं की थी।

**प्र. : आँहज़रत सल्ला० को अपने पैग़म्बर होने का कब यक़ीन (विश्वास) हुआ ?**

उ. : जब आपकी उम्र चालीस वर्ष की हो गई। आप एक दिन अपनी आदत की मुवाफ़िक ग़ारे हिरा में इबादत के वास्ते तशरीफ़ ले गये और ख़ुदा की बन्दगी (उपासना) में मशग़ूल हुए यकायक (अकस्मात) आपके सामने एक फ़िरिश्ता आया और बहुत ही हैबत और दबदबे (प्रताप) के साथ आपके सामने खड़ा हो गया और आप से कहा कि *इक़रा* की सूरत पढ़ो। आप ने कहा कि मैं पढ़ना नहीं जानता। उस फ़िरिश्ते ने आपको (सीने से लगाकर) दबाया और कहा कि पढ़ो। आप ने कहा कि मैं पढ़ना नहीं जानता। फिर उस फ़िरिश्ते ने उसी तरह आपको दबाया। ग़रज तीन बार यही हरकत की। उसके बाद आपको इक़रा की सूरत पढ़ाई और उसके बाद छिप गया।

**प्र. : यह फ़िरिश्ता कौन था ?**

उ. : यह हज़रत जिब्राईल अलै० थे ।

**प्र. : आँहज़रत सल्ला० ने जब उनको यकायक देखा था तो क्या आदमियों की सूरत में दखिा था ?**

उ. : आँहज़रत सल्ला० ने जिबरईल अलै० को असली सूरत में देखा और बड़े क़द क़ामत में देखा । जब वह आपकी नज़रों से ओझल हो गये तो आँहज़रत सल्ला० हिरा की गुफा से निकलकर अपने घर तशरीफ लाए और यह सब क़िस्सा अपनी धर्मपत्नी बीबी ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि० को सुनाया। बीबी ने सारा क़िस्सा सुनकर कहा कि बेशक आप पैग़म्बर हैं। उसके बाद आँहज़रत सल्ला० को वरक़ा बिन नोफ़िल के पास ले गई और सब क़िस्सा वरक़ा से बयान किया। वरक़ा ने आँहज़रत सल्ला० से सब क़िस्सा सुना। वरक़ा तौरात पढ़ते थे और तौरात पड़ने वालों में बहुत बड़े आलिम (विद्वान) थे। वरक़ा ने कहा कि यह वही फ़िरिश्ता है जो पैग़म्बर के पास वही लाता है। यही फ़िरिश्ता मूसा अलै० को दिखाई दिया था। जब यह फ़िरिश्ता हिरा की गुफ़ा में मुहम्मद सल्ला० को नज़र आया



**प्र. : हज़रत महेदी अले० का सिलसिल-ए-नसब बयान किया जाए?**

उ. : सैयद मुहम्मद महेदी अले० इब्ने सैयद अब्दुल्लाह बिन सैयद उसमान बिन सैयद ख़िज़र बिन सैयद मूसा बिन सैयद क़ासिम बिन सैयद नज्मुद्दीन बिन सैयद अब्दुल्लाह बिन सैयद यूसुफ़ बिन सैयद याहिया बिन सैयद जलालुद्दीन बिन सैयद न्यामतुल्लाह बिन सैयद इसमाईल बिन सैयदना इमाम मूसा काज़िम रज़ी० बिन सैयदना इमान जाफ़र सादिक़ रज़ी० बिन सैयदना इमाम बाक़र रज़ी० बिना सैयदना इमाम ज़ैनुलआबिदीन रज़ी० बिन सैयदना मौलाना हज़रत इमाम हुसेन रज़ो० बिन सैयदना मौलाना इमामुना ह० अली इब्ने अबी तालिब रज़ी०।

**प्र. : ह० महेदी अले० किस जगह और किस सन् (वर्ष) मे पैदा हुए।**

उ. : आप के माता - पिता शहर जोनपुर (उ.प्र.) में रहते थे आप उसी शहर में पैदा हुए और यह शहर भारत के मशहूर शहरों में से है। सोमवार १४ जमादिउल ऊला सन् ८४७ हिजरी में आप का जन्म हुआ। *शमसे विलायत* आप की तारीख़े विलादत है।

**प्र. : आप के कुछ हालात बयान कीजिए?**

उ. : आप जब पैदा हुए तो आपके दोनों हाथ बरहनगी को ढांके हुए थे, आपके पवित्र शरीर पर मक्खी नहीं बैठती थी और आपका साया नहीं था। आपके रोने की आवाज़ पर सुनने वालों के दिल नरम हो जाते थे। आपके जन्म के समय बुत गिर गये। आप जब पैदा हुए तो ग़ैब से यह आवाज सुनाई दी कि हक़ ज़ाहिर (प्रकट) हुआ और बातिल (असत्य) मिट गया, उस आवाज़ को ह० शेख़ दानियाल ने जो उस ज़माने में बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे सुनकर तअज्जुब (आशचर्य) किया। आप ने सब से पहले जो बात की वह यह थी कि महेदी आया। जब आपकी अम्र शरीफ़ उस सन् को पहुंची कि आप को कुछ शिक्षा दी जाये तो आपके पिता ह० सैयद अब्दुल्लाह रज़ी० ने आपको ह० शेख़ दानियाल रहे० के मदरसे (पाठशाला) में बिठाया। बालिग़ (जवान) होने से पहले ही आप बहुत बड़े आलिम (विद्वान) हो गये। शेख़ साहब की पाठशाला में बड़े - बड़े विद्वान आते थे और

याक़ूब अलै० पैग़म्बर थे और आपको इसराईल भी कहते हैं। आपको बारह फ़र्ज़न्द थे, उन सबको बारह बनी इसराईल कहते हैं।

**प्र. : बारह फ़र्ज़न्दों के क्या नाम हैं ?**

उ. : यहूज़ा, रोबील, शमऊन, लावी, रबालून, यश्जर, वदान, नफ़ताली, जाद, आशर, यूसुफ़ और बिनयामीन।

**प्र. : हज़रत मूसा अलै० किस फ़र्ज़न्द की औलाद से हैं ?**

उ. : हज़रत मूसा अलै० हज़रत लावी अलै० की औलाद से हैं।

**प्र. : दाऊद अलै० किसकी औलाद से हैं ?**

उ. : दाऊद अलै० हज़रत यहूज़ा अलै० की औलाद से हैं।

**प्र. : हज़रत ईसा अलै० किसकी औलाद से हैं ?**

उ. : हज़रत ईसा अलै० हज़रत सुलेमान इब्ने दाऊद अलै० की औलाद से हैं। हज़रत ईसा अलै० की माँ मर्यम, सुलेमान अलै० की पोती हैं।

**प्र. : क्या हज़रत दाऊद अलै० नयी शरीअत वाले नहीं थे ?**

उ. : पहले बयान हुआ है कि हज़रत दाऊत अलै० हज़रत मूसा अलै० की शरीअत पर अमल करते थे। अगरचे आप पर अल्लाह तआला ने ज़बूर उतारी थी मगर उसमें दुआऐं थी और अहकाम नहीं थे।

**प्र. : हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० कहां रहते थे ?**

उ. : आप मक्के में पैदा हूए और मक्के में ही रहते थे।

**प्र. : क्या हज़रत सल्ला० के बाप दादा भी मक्के में रहते थे ?**

उ. : जी हां मक्के में ही रहते थे।

**प्र. : हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० का मश्हूर नसब नामा (वंशावली) ज़िकर किया जोये ?**

उ. : मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़ बिन कुसइ



**प्र. : आपको किस वजह से बिला वास्ता तालीम होती थी और जिब्रईल अले० के ज़रिए से क्यों नहीं होती थी?**

उ. : पहले साबित हो चुका है कि जिसको जिब्रईल अले० के माध्यम से तालीम होती है वह नबी होता है और यह बात साबित (सिद्ध) हो चुकी है कि आँहज़रत सल्ला० पर नबुव्वत समाप्त हो चुकी और आप ख़ातिमे नबुव्वत हैं, इसलिये अगर महेदी अले० को भी जिब्रईल अले० के वास्ते से तालीम होगी तो आप नबी हो जायेंगे और रसूलुल्लाह सल्ला० ख़ातिमुल अमिबया नहीं रह सकेंगे। हालंकि क़ुरआने शरीफ़ से आपका ख़ातिमुल अम्बिया (अन्तिम नबी) होना साबित हो चुका है। मतलब यह कि रसूलुल्लाह सल्ला० की उम्मत में किसी शख़्स के लिये जिब्रईल अले० के ज़रिए शिक्षा क़ाबिले तस्लीम (स्वीकार्य) नहीं है इसीलिए महेदी अले० ने यह दावा किया है कि अल्लाह तआला मुझे ख़ुद बिला वासता तालीम देता है।

**प्र. : ह० महेदी अले० ने किन शब्दों मे अपने महेदी मौऊद होने का दावा फ़रमाया था?**

उ. : ह० महेदी मौऊद अले० के दावे के यह शब्द थे कि मुझ पर जो शख़्स ईमान लाया वह मोमिन है और जिसने मेरा इन्कार किया वह काफ़िर है।

**प्र. : क्या यह कुफ़्र शरई है?**

उ. : बैशक यह कुफ़्र शरई होगा क्योंकि ख़लीफ़तुल्लाह का इन्कार कुफ़्र शरई है।

**प्र. : ह० महेदी अले० ने महेदी होने के दावे पर क्या दलील (तर्क) पेश फ़रामाई है?**

उ. : दो दलीलें प्रस्तुत की है। एक इत्तेबाए ख़ुदा (ख़ुदा की आज्ञा का पालन) और दूसरी इत्तेबाए मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ला०।

**प्र. : क्या महेदी मौऊद अले० ने यह दावा फ़रमाया है कि मै रसूलुल्लाह सल्ला० का ताबे (अनुचर) हूँ और मुबय्यिने शरीअत हूँ?**

उ. : हाँ, यही दावा फ़रमाया कि मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० का अनुसरण

पैग़म्बर ऐसा नही है जो सारी दुन्या के लागों की हिदायत के लिए भेजा गया हो। बल्कि हर एक पैग़म्बर किसी एक क़ित्तए ज़मीन पर भेजा गया है कि उस भाग के लोगों को हिदायत करे और ख़ुदा की तरफ़ बुलाये। जौसा कि हज़रत ईब्राहीम अलै० बाबुल की ज़मीन पर हिदायत के लिये भेजे गये थे और हज़रत लूत अलै० मोतक़क़ात पर हिदायत करते थे। मोतक़क़ात उन गाँवों को कहते हैं जो क़हरे ख़ुदा (ईश्वरीय प्रकोप) से उलट गये। याक़ूब अलै० किनआन पर और मूसा अलै० मिसर पर, शोएब अलै० मदयन पर, हूद अले० क़ौमे आद पर, सालेह अले० क़ौमे समूद पर और ईसा अले० क़ौमे यहूद पर भेजे गये थे। मगर हज़रत मुहम्मद सल्ला० सारे इन्सानों बल्कि जिन जाति की भी हिदायत के लिए भेजे गये थे।

**प्र. : सबसे पहले कौन पैग़म्बर हुए और सब से अन्त में कौन पैग़म्बर हुए?**

उ. : हज़रत आदम अलै० सबसे पहले पैग़म्बर हुए और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० सब के आख़िर (अन्त) में पैग़म्बर हुए हैं।

**प्र. : क्या हज़रत आदम अलै० के पहले कोई पैग़म्बर नहीं था ?**

उ. : हज़रत आदम आलै० के पहले कोई आदमी नहीं था । सब आदमी हज़रत आदम अलै० की औलाद हैं। आपको अबुल वशर भी कहते हैं। हज़रत हव्वा जो आपकी बीबी है आप ही से पैदा हुई।

**प्र. : क्या अल्लाह तआला ने आपको बग़ैर माँ बाप के पैदा किया ?**

उ. : बेशक, अल्लाह ने आपको बग़ैर माँ बाप के पैदा किया और ज़मीन पर आपको अपना ख़लीफ़ा बनाया।

**प्र. : आदम अलै० ने किन लोगों को रास्ता बताया और गुमराही से बचाया?**

उ. : हज़रत आदम अलै० ने अपनी औलाद को हिदायत की और उनको ख़ुदा के अहकाम सिखाये।



फ़र्ज़ होती है और जब वह ख़ाती होगा तो उसकी तस्दीक़ फ़र्ज़ नहीं होगी।

**प्र. : क्या रसूलुल्लाह सल्ला० के सब सहाबा से महेदी अले० अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) हैं?**

उ. : बेशक अफ़ज़ल हैं और उसके दो कारण हैं। पहला यह कि महेदी अले० मासूम हैं जबकि सहाबए रसूलुल्लाह सल्ला० मासूम नहीं हैं। दूसरा यह कि महेदी अल० अल्लाह के ख़लीफ़ा हैं लेकिन सहाबा रसूलुल्लाह सल्ला० के ख़लीफ़े हैं। अतः जो अल्लाह का ख़लीफ़ा है वह रसूलुल्लाह सल्ला० के ख़लीफ़ा से अफ़ज़ल है।

**प्र : इससे पहले यह बात समझाई गई है कि महेदी अले० को सीधे ख़ुदा से फ़ैज़ मिलता है और रोज़ अल्लाह तआला से नई तालीम होती है तो फिर आपा आँहज़रत सल्ला० की क्यों पैरवी करते थे?**

उ. : तुम इस बात को ख़ूब समझ लो कि हर पैग़म्बर बावजूद इसके कि वह ख़ुदा से और जिब्रईल अले० से तालीम पाता है अपने से पहले पैग़म्बर का ताबे होता है जैसा कि ह० दाऊद अल० जो ख़ुद सहबे किताब थे और ख़ुदा और जिब्रईल अले० से फ़ैज़े तालीम पाते थे मगर आप० ह० मूसा अले० की शरीअत पर अमल करते थे और ख़ुदा से आपको इसी तरह का हुक्म था। आँहज़रत सल्ला० बावजूद इसके कि आप ख़ातिमुल अम्बिया हैं और साहबे क़ुरआने मजीद हैं मगर आपको अल्लाह ने यह हुक्म दिया था कि सब पैग़म्बरों की हिदायत की पैरवी करो और वह आयते शरीफ़ा यह है:- *ऊलाईकल् - लज़ीना हदल्लाहु फ़हदाहुम इक़्तदाहु (सूरह अन्आम-९०)।* इसलिए आँहज़रत सल्ला० ने उस हुक्म का पालन करते हुए सब पैग़म्बरों की पैरवी की। उसी तरह ह० महेदी अल० ने भी बावजूद इसके कि आप को हर रोज़ ख़ुद अल्लाह तआला से नई तालीम होती थी, अल्लाह तआला के हुक्म से आँहज़रत सल्ला० की पैरवी की है और उसी तबईयते ताम्मा (पूर्ण अनुसरण) की वजह से आप रसूलुल्लाह सल्ला० के बराबर हैं।

प्र. : रसूल की कितनी क़िस्में है ?

उ. : रसूल की दो क़िस्में हैं। एक वह रसूल है जो साहबे किताब (पुस्तक वाला) है यानी उस पर अल्लाह ने किताब उतारी है। दूसरा वह रसूल है जो साहबे किताब नहीं है। अक्सर पैग़म्बर ऐसे ही है।

प्र. : वह रसूल जो साहबे किताब है कितने क़िस्म के हैं ?

उ. : दो किस्म के हैं। एक वह है जो साहबे किताब और नई शरीअत (धर्म शास्त्र) रखता है जैसा कि हज़रत मूसा अलै०, हज़रत ईसा अलै० और हज़रत सैयदना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला०। दूसरा वह साहबे किताब है जो नई शरीअत न रखता हो जैसा कि हज़रत दाऊद अलै० पर ज़बूर उतरी है मगर उसमें नई शरीअत नहीं थी बल्कि हज़रत दाऊद अलै० हजरत मूसा अलै० की शरीअत पर हुक्म करते थे और अमल करते थे।

प्र. : क्या पैग़म्बर कोई ऐसा काम भी करते हैं जो दूसरे लोगों से नहीं हो सकता ?

उ. : हाँ, उनसे ऐसे काम ज़ाहिर होते हैं जो दूसरे लोग नहीं कर सकते। ऐसे काम को मोजिज़ः (चमत्कार) कहते हैं।

प्र. : क्या मोजिज़ः पैग़म्बर का फ़ेल (कार्य) है या अल्लाह तआला का फ़ेल है?

उ. : मोजिज़ः अल्लाह तआला का फ़ेल है जो नबी के तलब करने (इच्छा) पर सादिर (प्रकट) होता है और उस फ़ेल को अल्लाह तआला नबी के ज़रिए (माध्यम) से सादिर करता है। यह फ़ेल आदत के ख़िलाफ़ होता है और उम्मत से उसकी नज़ीर (समान) सादिर नहीं हो सकती।

प्र. : ख़लीफ़तुल्लाह किसको कहते हैं ?

उ. : ख़लीफ़तुल्लाह वह है जिसमें अम्बिया के सिफ़ात (गुण) हों और ख़ुदा से तालीम पाता हो, और अल्लाह तआला के हुक्म से लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाता हो। ख़लीफ़तुल्लाह दो क़िस्म के हैं एक वह है जिसको ख़ुदा से और जिबराईल अलै० से तालीम हासिल होती है उसको नबी कहते है।



हैं तो आप मासूम भी हैं और आँहज़रत सल्ला० ने भी आपका मासूम होना बयान फ़रमाया है और आप पर ईमान लाना फ़र्ज़ ठैराया है क्योंकि जब तक आपकी इत्तिबाअ न की जाएगी हलाकत और गुमराही (पथभ्रष्टी) दूर नहीं होगी। जब आपकी यह कैफ़ियत है तो आपका क़ौल व फ़ेल (वचन और कर्म) ख़ुद दलील होगा फिर आप के क़ैल व फ़ेल पर दूसरी दलील की ज़रुरत नहीं है मगर जिन फ़राएज़ का हम ने ज़िक्र किया है उनके क़तई (निश्चित) होने और फ़र्ज़ होने पर क़ुरआने मजीद की आयतें मौजूद हैं।

प्र. : तर्क दुन्या (दुनिया को त्यागना) पर कौन सी आयत दलील के तौर पर पेश की जाती है?

उ. : अल्लाह तआला फ़रमाता हैः *व तबत्तल इलैही तब्तीला* (सूरह मुज़म्मिल-८)। हमाम राज़ी कहते हैं कि *तबत्तल* से दुन्या का तर्क कर देना मक़सूद है क्योंकि जो शख़्स दुन्या में मशगुल होगा वह ख़ुदा में मशग़ुल नहीं हो सकता। इसके अलावा अल्लाह तआला फ़रमाता हैः- *मन काना युरीदुल् हयातद दुनिया वा ज़ीनतहा नुवफ़्फ़ी इलैहिम आमालहुम फ़ीहा व हुम फ़ीहा ला यबख़सून्। ऊलाईकल्लज़ीन लैसा लहुम फ़िल आख़िरति इल्लन्नार (सूरह हूद १५)*। यानि जो लोग दुनिया को और उसकी शोभा को चाहते हैं हम उनके आमाल पूरे कर देते हैं उसमें वह लोग घाटे में नहीं रहते उनके लिए आख़िरत (परलोक) में आग के सिवा कोई चीज़ नहीं है। अतः जब दुन्या की इच्छा का बदला आग में जलना है तो उसका छोड़ना फ़र्ज़ कर दिया गया है।

प्र. : ज़िक्रे ख़ुदा पर किस आयत की दलील पेश की जाती है?

उ. : *फ़ज़्क्रुरुल्लाहा क़ियामन् व क़ऊदन् व अला जुनूबिकुम* (निसा-१०३) - यानि अल्लाह तआला की याद खड़े हुए बैठे हुए और लेटे हुए हर वक़्त करो। इसी आयत से ज़िक्रें ख़ुदा फ़र्ज हो गया है।

प्र. : तलबे दीदारे ख़ुदा पर कौन सी आयत दलील है?

उ. : *मन्काना यर्जु लिक़ाअ रब्बिही फ़लयामल अमलन् सालिहन् वला युश्रिक*

है और यह पाक बन्दा उसको समझ लेता है। दुसरी वही यह है कि अल्लाह तआला अपने बन्दे से ख़ुद कलाम करता है। यह दोनों क़िस्म की वही पैग़म्बरों और ग़ैर पैग़म्बरों को होती है। तीसरी वही यह है कि अल्लाह तआला फ़िरिश्ते के ज़रिए अपने बन्दे को तालीम (शिक्षा) देता है। यह वही जिस पर होती है वह ख़ुदा का पैग़म्बर होता है।

**प्र. : क्या यह सब वहियें इकट्ठा (एकत्र) भी की जाती हैं ?**

उ. : हाँ, इकट्ठी की जाती हैं और उन्ही के मजमूओं को ख़ुदा की किताब कहते हैं, शर्त यह है कि पैग़म्बर या ख़ुदा का ख़लीफ़ा यह बता दे कि इन अलफ़ाज (शब्दों) में मुझे ख़ुदा ने यह तालीम दी है और यह ख़ुदा का कलाम है मेरा नहीं हैं।

**प्र. : ख़ुदाए तआला की कितनी किताबें हैं ?**

उ. : हज़रत रसूलुल्लाह सल्ला० ने शरीअत में यह तालीम दी है कि अल्लाह तआला की किताबें चार हैं और सहीफ़े उनके सिवा हैं।

**प्र. : सहीफ़ा किसको कहते हैं ?**

उ. : सहीफ़ा और किताब का एक ही माना है। मगर अल्लाह तआला ने जिन वहीयों के मजमूओं को सहीफ़ा फ़रमाया है, उसको सहीफ़ा कहते हैं और जिन वहीयों के मजमूओं को किताब फ़रमाया है उसको किताब कहते हैं।

**प्र. : किताबों के क्या नाम है ?**

उ. : तौरात, ज़बूर, इन्जील, क़ुरआने मजीद ।

**प्र. : सहीफ़ों के क्या नाम हैं ?**

उ. : अल्लाह तआला ने सहीफ़ों के नाम नही बताये हैं बल्कि जो सहीफ़े जिस पैग़म्बर पर उतारे हैं उसी पैग़म्बर के नाम मे साथ ज़िक्र किये जाते हैं। जैसा कि आदम अलै० के सहीफ़े, इब्राहीम अलै० के सहीफ़े।

**प्र. : जिन पैग़म्बरों पर ख़ुदा की किताबें उतरी हैं उनके क्या नाम हैं ?**

उ. : हज़रत मूसा अलै० पर तौरात उतरी है। हज़रत दाऊद अलै० पर ज़बूर



**प्र. : उश्र का क्या अर्थ है और किस आयत से फ़र्ज़ है?**

उ. : उश्र का अर्थ यह है कि माल का दसवाँ हिस्सा निकालना और उसको राहे ख़ुदा में ख़र्च करना चाहिये और यह माल कसब से प्राप्त किया गया हो या मतरुका (दाय) हो या किसी ने बख़्श दिया हो उन सब में से उश्र निकालना फ़र्ज़ है क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है:- *वन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़नाकुम* (अल बक़रह-२५४) अन्फ़िक़ू *मिन तय्यिबाति मा कसबतुम* (अल बक़रह - २६७) - और दूसरी जगह फ़रमाता है:- *ख़ुज़मिन अम्वालिहिम सदक़* (अत् तौबा-१०३) - इस जगह सदक़ा से ज़कात मुराद नहीं है क्योंकि दूसरी आयतों मे ज़कात का फ़र्ज़ होना साबित हो गया है इसलिए यहाँ उससे वह सदक़ा मुराद हो जो ज़कात से जुदा है। इमाम महेदी मौऊद अले० ने फ़रमाया कि अपने माल का दसवाँ हिस्सा सदक़ा दिया करो। यह हुक्म चूँकि ख़ुदा के ख़लीफ़ा का है और हमारे ज़माने तक उसकी रिवायत मुतवातिर (निरंतर) पहुँची है लिहाज़ा (अतः) उस सदक़े से माल का दसवाँ हिस्सा ही मुराद है क्योंकि मुबय्यिने शरीअते रसूलुल्लाह सल्ला० यानि इमाम महेदी अले० ने जो मासूम (प्राकृतिक निष्पाप) हैं उसकी तख़सीस (विशेषता) करदी है और इमाम मासूम का क़ौल (वचन) दलीले हुज्जत होता है।

**प्र. : इस क़िस्म का सदक़ा किन लोगों को देना चाहिये।**

उ. : मिस्कीनों और मुहताजों (दरिद्र / विर्धन) को यह सदक़ा देना चाहिये चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाता है:- *इन्नमस् सदक़ातु लिलफ़ुक़राइ वल मसाकीनि वल आमिलीन अलैहा वल मुअल्लफ़ति क़ुलूबुहुम व फ़िर रिक़ाबि वल ग़ारिमीन व फ़ी सबीलिल्लाहि वब्निस सपीलि फ़रीज़तन मिनल्लाह, वल्लाहु अलीमुन हकीम (९:६०)*। सदक़ात फ़ुक़रा और निर्धन के लिए हैं और उन लोगों के लिए जो सदकों पर आमिल नियुक्त किये जायें और वह लोग भी सदक़ात के योग्य हैं जिनकी तालीफ़े क़ुलूब (दिल जीतना) मंजूर है और ग़ुलामों के आज़ाद करने और दंड अदा करने और ख़ुदा की राह में देने और मुसाफ़िर (पथिक) के लिए अल्लाह तआला ने मुक़र्रर (निश्चित) किया है।

**प्र. : पैग़म्बरों को फ़िरिश्ते किस लिए नज़र आते हैं ?**

उ. : अल्लाह तआला ने बाज़ इन्सानों को अपनी कृपा से बहुत ही पाक और रौशन दिल (पवित्र तथा प्रबुद्ध) पैदा किया है, उनके जान व दिल पाकी और रोश्नाई में फ़रिश्तों से कम नहीं है। इस लिए फ़िरिश्ते उनको नज़र आते है।

**प्र. : ऐसे लोगों के पास अल्लाह तआला फ़िरिश्तों को किस लिए भेजता है?**

उ. : अल्लाह तआला अपने बन्दों को सीधी राह पर जलाने और उनसे अपनी ख़ुशी के काम कराने के लिए ऐसे पाक लोगों को जिनका ऊपर ज़िकर किया गाया है, अपने बन्दों के पास भेजता है और उनको अपना नाइब (प्रतिनिधि) बनाता है और उनके पास फ़िरिश्तों को भेजकर अच्छी - अच्छी बातें और भलाई के काम सिखलाता है। फ़िरिश्ते उनसे बात जीत करते हैं और अल्लाह तआला ने उनको जो कुछ फ़रमाया है वह सब सुना देते हैं। उसके बाद यह पाक बन्दे अल्लाह तआला का हुक्म उसके बन्दों को सुना कर अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाते हैं। उन पाक बन्दों को पैग़ाम्बर कहते हैं।

**प्र. : क्या फ़िरिश्ते भी अल्लाह तआला की इबादत करते हैं ?**

उ. : बेशक (निःसंदेह) इबादत करते हैं। उनमें से बाज रूकू में हैं और बाज़ सजदे में हैं। ग़रज़ जैसा हुक्म होता है बैसा अमल करते हैं।

**प्र. : उन फ़िरिश्तों में बुज़ुर्ग (प्रतिष्ठित) फ़िरिश्ते कितने हैं और उनके क्या नाम हैं ?**

उ. : उन फ़िरिश्तों में प्रतिष्ठित चार फ़िरिश्ते हैं। जिबराईल अलै०, मीकाईल अलै०, इज़राईल अलै० इसराफ़ील अलै० ।

**प्र. : उनकी क्या ख़िदमतें है ?**

उ. : जिबराईल अले० पैग़म्बरों पर ख़ुदा की तरफ़ से *वही* लाते हैं। मीकाईल अलै० इन्सान और हैवानात के रिज़्क (जीविका) की तदबीर (प्रबन्ध) करते हैं। इज़राईल अलै० जानदारों की रुह क़ब्ज़ करते हैं। इसराफ़ील



**प्र. : महेदी अले० के मुख़ालिफ़ (बिरोधी) के पीछे नमाज़ पढ़ना जाईज़ है या नहीं?**

उ. : महेदी अले० के मुख़ालिफ़ के पीछे नमाज़ जाईज़ (उचित) नहीं है।

**प्र. : नमाज़ के बाद हाथ उठा कर दुआ मांगना दुरूस्त (उचित) है या नहीं?**

उ. : सही हदीस से साबित नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह सल्ला० ने नमाज़ के बाद हाथ उठाकर दुआ मांगी है इसलिए नमाज़ के बाद हाथ उठाकर दुआ नहीं मांगना चाहिए बल्कि सज्दे में आहिस्ता दुआ करना चाहिये।

**प्र. : अगर महेदी अले० की तफ़्सीर (कुरआने मजीद की सविस्तार व्याख्या) और अइम्मए मुज्तहिदीन की तफ़्सीर में इख़तिलाफ़ हो तो किस हुक्म पर अमल करना चाहिए?**

उ. : महेदी अले० ख़लीफ़तुल्लाह और मुख़बिरे सादिक़ (सत्य वादी सूचक) हैं और ख़ता से मासूम (प्राकृतिक निष्पाप) हैं, आपके हुक्म पर अमल करना फ़र्ज़ है मुज्तहिदों के हुक्म को छोड़ देना चाहिए क्योंकि मुज्तहिद ख़ता से मासूम नहीं है।

**प्र. : महेदी अले० को नासिरे दीन कहना चाहिए या ख़लीफ़तुल्लाह कहना चाहिए।**

उ. : नासिरे दीन वह शख़्स है जो दीन की मदद करे तो हर आलिम और नमाज़ रोज़े के अहकाम को सिखाने बाला भी नासिरे दीन हो सकता है इसलिए आपको ख़लीफ़तुल्लाह, ख़ातिमे दीन, दाई इलल्लाह, ताबए तामे रसूलुल्लाह सल्ला० कहना चाहिए।

**प्र. : क्या ह० महेदी अले० को नबी व रसूल मुशर्रअ कह सकते है?**

उ. : नहीं कह सकते। क्योंकि क़ुरआने मजीद में साबित हो गया है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ला० पर नबुव्वत ख़त्म हो चुकी और आँहज़रत सल्ला० ने भी फ़रमाया है कि मेरे बाद कोई नबी साहबे शरअ नहीं होगा। इसलिए आपको नबीए मुशर्रअ कहना उचित नहीं है।

**प्र. : क्या अल्लाह सब चीज़ों पर क़ादिर है ?**

उ. : हाँ, अल्लाह तआला सब चीज़ों के पैदा करने मिटाने पर और फिर एक पल में सब दुनिया के पैदा करने, मारने और जिलाने पर क़ादिर है। देखो उसने अपनी क़ुदरत से ज़मीन बनाई, आसमान बनाये, सूरज बनाया, चाँद बनाया, बेशुमार सितारे पैदा किये, जानदार और बेजान चीज़ें पैदा की, बस वही हमारा पैदा करने वाला है और हम उसके बन्दे हैं।

**प्र. : क्या कुछ लोग ऐसे भी है जो अल्लाह तआला के साथ मख़लूक़ को शरीक (साझी) मानते है ?**

उ. : हाँ, हिन्दू अपने हाथों से मूर्तियाँ बनाते और उनको ख़ुदा के शरीक मानते और उनकी पूजा करते हैं। और पारसी भी सूरज और आग की पूजा करते हैं और दो ख़ुदा कहते है, एक भलाई को पैदा करने वाला और दूसरा बुराई को पैदा करने वाला ख़ुदा। और ईसाई भी यह कहते है कि ख़ुदा तीन है। यह सब मुश्रिक (अनेकेश्वर वादी) हैं।

**प्र. : क्या इस तरह नहीं कहना चाहिए ?**

उ. : इस तरह कहना कुफ़्र है।

**प्र. : कुफ़्र के क्या माने है ?**

उ. : कुफ़्र के माने छुपाने के हैं। मगर शराअ (धार्मिक नियम) में कुफ़्र के यह माने है कि अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात (गुण) में किसी को शरीक करना, या उसके अहकाम (आज्ञा) को न मान्ना या फ़रिशतों पर ईमान न लाना, या अल्लाह तआला की किताबों को झुटलाना (अस्वीकार करना), क़यामत (प्रलय) पर ईमान न लाना, या नेकी व बदी को अल्लाह तआला की मख़लूक न मान्ना, या मरने के बाद अज़ाबे क़ब्र (क़ब्र की संकट) और दोज़ख़ (नरक का सन्ताप) का इन्कार करना, या मरकर फिर दोबारा पैदा होने का इनकार करना या हिसाब किताब (पाप पुण्य का लेखा जोखा) दोज़ख़ व जन्नत का इनकार करना, हराम चीज़ों को हलाल समझना और हलाल चीज़ों को हराम समझना।



**प्र. : ईमान की हमारे मज़हब में क्या तारीफ़ है?**

उ. : *अशहदु अन् लाईलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दहू व रसूलहु* - कहना और जिन चीजों को आँहज़रत सल्ला० ने ज़रुरियाते दीन (धार्मिक आवश्यकता) में शुमार (गिनती) किया है उनके हक़ (सत्य) होने का एतिक़ाद रखना और इस बात की तस्दीक़ करना कि इमाम महेदी अले० पैदा हुए महदियत का दावा किया और रेहलत (देहावसान) की। अतः हमारे पास मोमिन वही शख़्स है जो इन सब उमूर पर ईमान लाया हो।

**प्र. : ऐतिक़ाद हर जमाने में मुक़र्रर हो सकता है या उसके लिए कोई ख़ास ज़माना है?**

उ. : ऐतिक़ाद सहाबा और ताबईन के ज़माने में मुरत्तब (संपादित) हो सकता है।

**प्र. : किन चीजों से एतिक़ाद बन सकता है ?**

उ. : कुरआन से हदींसे मुतवातिर से और रिवायते महेदी अले० से जो कि मुतवातिर हो। बाजों ने बयान किया है कि इज्माए सहाबा व ताबईन से भी इन उमूर (विषय) की तफ़सील तुम को बड़े किताबों मे नज़र आयेगी।

**प्र. : हमारे मज़हब में सहाबी की क्या तारीफ़ है?**

उ. : सहाबी वह है जो ह० महेदी अले० से तरके दुन्या के साथ बैअत की हो और आप की सुहबत (संगति) में रहा हो, और जिसने बग़ैर तरके दुन्या हज़रत की तस्दीक़ (पुष्टि) व बैअत की है वह सहाबी नहीं है।

**प्र. : हज़रत इमाम अले० की तस्दीक़ व तरके दुन्या के बाद आगर किसी ने इमाम अले० के साथ हिजरत (प्रवास) नहीं की है तो वह भी सहाबी है या नहीं?**

उ. : सहाबी तो है मगर वह तारिके फ़र्ज़े हिज्रत है। हाँ अगर महेदी अले० ने ख़ुद उसको वतन में रहने की इजाज़त (अनुमति) दी है तो वह इससे मुस्तस्ना (अपवादित) है।

# भूमिका

हज़रत अल्लामा बहरूल उलूम अशफ़ुल उलमा सैयद अश्रफ़ शमसी रहे० एक प्रसिद्ध विद्वान थे। उनका जन्म १२८० हिज्री १८६३ ई० में हैदारबाद में हुआ। शिक्षा के बाद आप हैदारबाद के प्रसिद्ध विद्यालय ''दारुल उलूम'' और उसके बाद उस्मानिया विश्वविद्यालय में १९२७ तक प्राधयापक रहे। दिन रात शिक्षा देने के साथ साथ आप एक कवी और लगभग डेढ़ सौ से अधिक पुस्तकौं के लेखक भी थे। उनका सबसे बड़ा कारनामा अरबी भाषा मे लिखी गई तफ़सीर ''लवामेउल बयान'' है। भारत में केवल चंद ही लोगौं ने अरबी भाषा मे तफ़सीर लिखी है। अल्लामा शम्सी का देहांत हैदराबाद में २६ मुहर्रम १३४९ हिर्ज्र / २४ जून १९३० को हुआ।

अल्लामा शम्सी रहे० ने कम उम्र बच्चों की शिक्षा के लिये उर्दू भाषा में यह रिसाला ''अल - अक़ाइद'' (दो भाग १३३२ हिज्री) / १९१३ में लिखा था जो अबतक कई बार प्रकाशित होचुका है। उर्दू भाषा से अपरिचित बच्चों की सुहूलत के लिये जो धर्मज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, मैंने इस पुस्तक का सरल हिन्दीं में अनुवाद किया है जो पहली बार मर्कज़ी अंजुमने महेदविया, हैदरबाद ने १९९१, १९९२ में प्रकाशित किया था, और इस पुस्तक की लाभ कारिता के कारण अल्लामा शम्सी रिसर्च अकाडमी की और से २००४ में प्रकाशित किया गया था फिर अब दुबारा प्रकाशित किया जा रहा है।

अल - अक़ाइद के पहले भाग में नबुव्वत और दूसरे भाग में विलायत से सम्बन्धित विषयों को प्रशनोत्तर के रुप में पेश किया गया है और हर प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर दिया गया है और उन विषयों को अल - अक़ाईद के तीसरे और चौथे भाग में विस्तारपूर्वक समझाया गया है उर्दू भाषा में चारों भाग अकाडमी ने प्रकाशि किये है और हिन्दी और अंगरेज़ी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है। यदि किसी विषय में भेद भाव हो या समझना कठिन हो तो पढ़ने वालौं से अनुरोध है कि तुरंत कोई नतीजा निकालने से पहले उस विषय का परिश्रमपूर्वक अध्ययन करें और सोज - विचार करें क्योंकि यह पुस्तक पवित्र क़ुरआन, हदीस और अहले सुन्नत के महान विद्यावानौं के अक़ाइद पर आधारित है।

**शेख़ चाँद साजिद**
अनुवादक



**प्र.** : इमाम अले० की कितनी बीबियाँ (पत्नियाँ) थीं ?
उ. : चार थीं ? बीबी अलाहदती, बीबी बोन्जीं, बीबी मलकान, बीबी भीका।

**प्र.** : इमाम अले० को कितने फ़र्ज़ंद (पुत्र) थे?
उ. : बंदगी सैयद महमूद सानीए महदी रज़ी०, ब. सैयद अज्मल रज़ी० जो बजपन में ही स्वर्गवास हो गये, ब. सैयद अली रज़ी० जो शहीद हो गये, ब. सैयद हमीद रज़ी० और ब. सैयद इब्राहीम रज़ी०।

**प्र.** : इमाम अले० को कितनी पुत्रियाँ थी?
उ. : तीन बेटियाँ थीं। बीबी फ़ातिमा, बीबी अख़ुन्दा बड़नजी और बीबी हदयतुल्लाह रज़ी०।

**प्र.** : ब. सैयद महमूद सानीए महेदी रज़ी० की माँ का नाम क्या है?
उ. : बीबी अलाहदती रज़ी० है। ब. सैयद अज्मल रज़ी० की भी माँ बीबी अलाहदती हैं और महेदी अले० की दो पुत्रियाँ बीबी अख़ुंदा बड़नजी और बीबी फ़ातिमा भी बीबी अलाहदती के बतन (पेट) से हैं।

**प्र.** : बंदगी सैयद इब्राहीम रज़ी० की माँ का क्या नाम है?
उ. : बीब बोनजी रज़ी० है।

**प्र.** : बंदगी सैयद हमीद रज़ी० की माँ का क्या ना है?
उ. : बीबी मलकान रज़ी० है और ह० महेदी अले० की पुत्री बीबी हदयतुल्लाह भी आप ही के बतन से हैं।

**प्र.** : बंदगी मियाँ सैयद अली रज़ी० की माँ का नाम क्या है?
उ. : बीबी भानमती रज़ी० है।

**प्र.** : ह० महेदी अले० का दावा कितने वर्ष रहा?
उ. : बराबर तेईस (२३) वर्ष रहा।

## प्रकाशन - 18

### अल्लामा शम्सी रिसर्च अकाडमी, हैदराबाद

पुस्तक का नाम : **अल. अकाइद (पहला और दूसरा भाग)**

लेखक : हज़रत अल्लामा बहरूल् उलूम सैयद अशरफ़ शम्सी रह०

अनुवादक : शेख़ चाँद साजिद, एम.ऐ.एम.फिल (उस्मानिया)

प्रकाशक : नवम्बर २०१४ / सफर १४३६ हिज्री

Type setting : Rheel Graphics - 27661061

प्रकाशक : **अल्लामा शम्सी रिसर्च अकाडमी**

Allamah Shamsi Research Academy
1-6-806, Mahdi Manzil, Daira Musheerabad
Hyderabad - 500020.
Ph. : 65588316 / Cell : 98491 70775


**अल्लाह ने दिया है**

**सय्यद यदुल्लाह शजी यदुल्लाही संस्थापक अध्यक्ष**
**अल्लामा शम्सी सिसर्च अकाडमी की प्रिय पुत्री**
**स्वर्गीय सैयदा अस्मा बानो यदुल्लाही के ईसाले सवाब के लिये**



ने बयान फ़रमाया है और इमामों की राय (विचार) उसके ख़िलाफ़ है तो इमाम (महेदी) अले० के आदेश अनुसार अमल करना फ़र्ज़ है क्योंकि इमाम अले० मासूम (अप्रमाद) है और अल्लाह के ख़लीफ़ा हैं और हज़रात अइम्मए मुजतहिदीन मासूम नहीं है। इसलिए ग़ैर मासूम के हुक्म को मासूम के हुक्म के मुक़ाबले में छोड़ देना चाहिए।

**प्र. : अगर कोई हदीस इमाम महेदी अले० के क़ौल (वचन) के ख़िलाफ हो तो क्या उसको भी छोड़ देना चाहिए?**

उ. : बेशक अगर ख़बरे वाहिद हो तो उसको छोड़ देना चाहिए।

**प्र. : ख़बरे वाहिद की क्या तारीफ़ है?**

उ. : ख़बरे वाहिद लुग़त में (शब्दानुसार) वह हदीस है जिसकी रिवायत (वर्णन) एक व्यक्ति ने की हो और इस्तेलाहे शरआ (धार्मिक परिभाषा) में ख़बरे वाहिद वह है जिस मे मुतवातिर (निरंतर) की शर्तें न हो ऐसी हदीस के माना (अर्थ) यक़ीनी नहीं होते और इमाम अले० का जो क़ौल व फ़ेल है वह यक़ीनी (निः संदेह) है इसलिए इमाम अले० का क़ौल व फ़ेल इख़तियार (ग्रहण) किया जाए और ख़बरे वाहिद छोड़दी जाए। और हदीसे मश्हूर की हालत भी यही है क्योंकि वह भी ख़बरे वाहिद है मगर ताबईन सहाबा में वह मशहूर हो गई है।

**प्र. : हदीसे मुतवातिर की क्या तारीफ़ है?**

उ. : हदीसे मुतवातिर वह है जिस की रिवायत बड़ी जमाअत ने की हो और हर तबक़े में बड़ी जामअत हो यह जमाअत ऐसी हो कि उनका झूटी बात पर इकट्ठा होना मुहाल (असंभव) हो, उससे इल्म यक़ीनी होता है।

**प्र. : ह० महेदीं अले० की रिवायत की सिहत (की जाँच) का क्या तरीका (नियम) है?**

उ. : ह. बंदगी मियाँ सैयद खुंदमीर रिद्दीक़े बिलायत रज़ि० ने *अकीदए शरीफ़ा* मे लिखा है कि इमाम अले० ने फ़रमाय है कि मेरी रिवायत (कथन) को क़ुरआने मजीद से मुताबिक़त (तुलना) करो और देखो